RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

आध्यात्म की नई उड़ान...

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष 06 अंक 11 हिन्दी (मासिक) नवंबर 2019 सिरोही पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 9.50

03

07 सबकुछ बदल जाता जब हम, अपनी.....

11 आध्यात्मिक जगत के सितारे.....

पांच दिवसीय वैश्विक शिखर सम्मेलनः 140 देशों के सात हजार विद्वानों ने मंथन कर निकाला निष्कर्ष

07 हजार देश-विदेश से विद्वान पहुंचे

05 दिन चला वैश्विक शिखर सम्मेलन

समापन पर पहुंचे लोकसभा स्पीकर ओम बिरला का ब्रह्माकुमारीज की ओर से किया गया नागरिक अभिनंदन

आध्यात्म से ही आएगी एकता, शांति और समृद्धि

Global Submit 2019

150
से अधिक केंद्रीय मंत्री, सांसद, विधायक, संत, सामाजिक कार्यकर्ता ने रखे विचार

250
देश के जाने-माने कलाकारों ने बनाईं पेंटिंग्स

05
देशों से पहुंचे गायक, संगीतज्ञ और बाल कलाकार

शिव आमंत्रण आबू रोड (राजस्थान)। 140 देशों से सात हजार विद्वान। आठ सत्र। डेढ़ सौ से अधिक वक्ता। संत-महात्मा से लेकर राजनीतिज्ञ। पांच दिन सुबह-शाम एक ही चिंतन- विश्व एकता, शांति और समृद्धि। मौका था ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय आबू रोड (माउंट आबू) में आयोजित पांच दिवसीय वैश्विक शिखर सम्मेलन का। इसमें अपने क्षेत्र के जाने-माने विद्वान और विशेषज्ञों ने मंथन कर निष्कर्ष निकाला कि आध्यात्म ही एकमात्र ऐसा जरिया, सूत्र, उपाय है जिसे अपनाने, जीवन में आत्मसात् करने से विश्व एकता, शांति और समृद्धि आएगी। विश्व में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जिसने वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश दिया। सम्मेलन में उपराष्ट्रपति एम. वैंकेया नायडू, लोकसभा स्पीकर ओम बिरला, राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र से लेकर केंद्रीय मंत्रियों, राज्य मंत्रियों और विदेशी मेहमानों ने शिरकत करते हुए आध्यात्म को बढ़ावा देने और इसे जीवन में अपनाने पर जोर दिया।

हमारी वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना: उपराष्ट्रपति नायडू

आध्यात्म और धर्म

उपराष्ट्रपति नायडू ने कहा कि गीता स्वयं ईश्वरीय उपदेश है। महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानंद, संत रविदास, गुरुनानकदेव आदि महापुरुषों- संतों ने समाज को आध्यात्म के जरिए नई दिशा दी है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान भी आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का संदेश विश्व के 140 देशों में अपने आठ हजार से अधिक सेवाकेंद्रों के माध्यम से दे रहा है। आध्यात्म से ही विश्व में एकता, शांति, समृद्धि आएगी। 'माधव सेवा ही मानव सेवा' हमारा संस्कार रहा है। स्वयं को खोजना ही आध्यात्म है। जो लोकतंत्र के नाम पर आतंक फैला रहे हैं वह धर्म के विरोधी हैं। दुनिया को पीस प्रोग्रेस की जरूरत है। संघर्ष के विरुद्ध शिक्षा और आध्यात्मिक ज्ञान ही विश्व में सच्ची शांति, एकता, समरसता और स्वायित्व सुनिश्चित कर सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान से ही दुनिया में शांति और सद्भाव आ सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान में ही वह शक्ति है जो विश्व को एकता के सूत्र में बांध सकता है।

आध्यात्मिक चेतना को जागृत करता है राजयोग ध्यानः पीएम मोदी

अन्तर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन की सफलता के लिए देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संदेश भेजकर कहा कि आध्यात्मिकता-आंतरिक शक्ति, एक ऐसी अंतर्निहित शक्ति है, जो सदियों से हमारे देश और हमारे लोगों को चला रही है। हमारा देश, एक ऐसा देश रहा है, जो ''लोकः समस्त सुखिनःभवन्तु'' इस सिद्धांत पर विश्वास करता है। आधुनिक जीवन शैली की वजह से तनाव तीव्र गति से बढ़ रहा है। परन्तु यह ऐसी आध्यात्मिक परंपरा है जो हमारे सामाजिक रचना को बचाने और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जीवन के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण ने हमें सभी बुराइयों से लड़ने और परंपराओं के गुणों को बनाए रखने में बहुत मदद की है। आध्यात्मिक ज्ञान आंतरिक चेतना को जागृत करता है और एक व्यक्ति को शांति तथा स्वास्थ्य प्रदान करता है। मेडिटेशन वा ध्यान, शरीर, मन और आत्मा के बीच एक संतुलन बनाने में एक सहायक तंतु है। यह शिखर सम्मलेन शांति, स्थिरता और सार्वभौमिक प्रेम से भरे जीवन में राजयोग ध्यान के महत्वपूर्ण महत्व पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करेगा।

सदा खुश रहो, आबाद रहो

परमात्मा मेरा शिक्षक, सद्गुरु, सखा, माता और पिता भी है। मैं सदा याद रखती हूं मैं कौन (आत्मा) और मेरा कौन (परमात्मा)। हम सभी एक पिता की संतान हैं। आपस में भाई-बहन हैं। इसी स्वमान में सदा मग्न रहती हूं। यदि जीवन में प्रेम और सच्चाई है तो खुशी अपने आप आ जाएगी। सदा खुश रहो, आबाद रहो। धैर्य व्यवहार को मधुर बनाता है। हमारा भारत देवों का स्थान माना जाता है। चारों तरफ मंदिर-मस्जिद हैं। जो प्रेम, शांति, खुशी का संदेश देते हैं।

● दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

आतंकवाद

उपराष्ट्रपति नायडू ने कहा कि हमने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया है क्योंकि हमारी भावना वसुधैव कुटुम्बकम् की रही है। आज आतंकवाद के विरुद्ध सभी देशों को मिलकर प्रयास करना होगा, सभी को आगे आना होगा। पूरी दुनिया को एकसाथ आतंकवाद को खत्म करने के लिए कदम उठाने होंगे। ब्रह्माकुमारी संस्था जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण को लेकर गंभीरता पूर्वक प्रयास कर रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मुख्य प्रशासिका दादी जानकी को ब्रांड एंबेसेडर बनाया है। संस्था ने अपने प्रयासों से समाज में स्वच्छता का संदेश देने का सराहनीय प्रयास किया है। विश्व शांति के लिए अपने अभियानों में महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने संस्था को सात अंतरराष्ट्रीय शांतिदूत पुरस्कारों से सम्मानित किया है। संस्था बेटी बचाओ, महिला सशक्तिकरण को लेकर नव संदेश देने के साथ जागरूक कर रही है।

युवाओं की ऊर्जा को ब्रह्माकुमारीज संस्था सही दिशा में लगा रही हैः लोकसभा स्पीकर ओम बिरला

बिरला बोले- युवा देश के केंद्र बिंदु हैं, भौतिकता छोड़ आध्यात्म का मार्ग अपनाएं

शिव आमंत्रण आबू रोड। वैश्विक शिखर सम्मेलन के समापन पर लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने कहा कि मानवीय मूल्य कम हो रहे हैं। कई देश आपस में लड़ रहे हैं, हिंसा का वातावरण फैला रहे हैं। ऐसे में भारत ही है जो संपूर्ण विश्व में शांति, सद्भाव और समृद्धि का संदेश दे रहा है। भारत का विश्व में मान-सम्मान बढ़ रहा है। महात्मा गांधी जी ने भी वर्षों पहले विश्वभर में शांति और अहिंसा का संदेश दिया था जिसे आज भी दुनिया मानती है। शांति, सद्भाव, नैतिकता, परोपकार, सत्कर्म तो हमारी संस्कृति रही है। सदियों से भारत विश्व में आध्यात्म की गंगा बहा रहा है। भारत विश्वगुरु था और फिर से बनने जा रहा है। इसमें ब्रह्माकुमारीज संस्थान की अहम भूमिका रहेगी। युवा भौतिकता को छोड़ आध्यात्मिकता से जुड़ें। ब्रह्माकुमारीज ने विश्वविद्यालयों से जुड़कर मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्म को पाठ्यक्रम में शामिल किया है जो सराहनीय कार्य है। युवाओं की ऊर्जा को ये संस्था सही दिशा में लगा रही है, उन्हें आध्यात्म से जोड़कर समाज सुधार के कार्य से जोड़ा जा रहा है।

आध्यात्म से ही राष्ट्र की होगी समृद्धि...

बिना मानसिक स्वास्थ्य के कोई देश या राष्ट्र समृद्धि की ओर नहीं बढ़ सकता है। आध्यात्म से आंतरिक शांति आती है। यहां से संदेश दिया जा रहा है कि परमात्मा एक है। दादी जानकी 103 वर्ष की उम्र में भी हजारों ब्रह्माकुमारी बहनों का भारत के साथ विश्वभर के साढ़े आठ हजार सेवाकेंद्रों का मार्गदर्शन कर रही हैं।

नारी का आध्यात्मिक सशक्तिकरण देवत्व के भाव को साकार कर रहा है: राज्यपाल मिश्र

राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा कि अपनी आत्म जागृति को जागृत करना ही आध्यात्म है। ये गौरव का विषय है कि ब्रह्माकुमारी संस्था नारी शक्ति द्वारा संचालित वैश्विक संगठन है। जो आध्यात्मिक ज्ञान से आगे बढ़ रही है और समाज को सकारात्मकता की ओर ले जा रही है। संस्था शुरुआत में तमाम विरोधों के बाद भी 83 वर्षों में विश्वभर में आध्यात्मिक ज्ञान को पहुंचाया है। 103 साल की उम्र में भी दादी जानकी इसकी कुशल प्रशासक हैं ये योग से ही संभव है। नारी का आध्यात्मिक सशक्तीकरण देवत्व के भाव को साकार कर रहा है। संस्था हर वर्ष लाखों की संख्या में पौधारोपण कर पर्यावरण बचाने का अभिनव प्रयास कर रही है। यहां से मानव जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने का प्रयास किया जा रहा है आज ऐसे प्रयासों की दुनिया को जरूरत है।

देश आगे बढ़ाने में देश चलाने वालों को नारी शक्ति का पूरा सम्मान करना पड़ेगा: केंद्रीय कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद

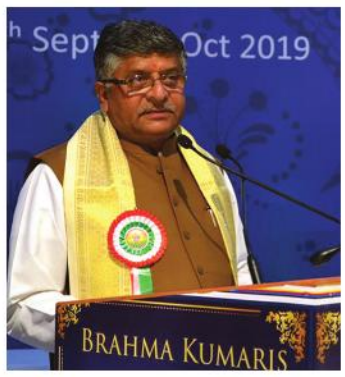

केंद्रीय कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि भारत के इतिहास में सबसे अधिक महिलाएं लोकसभा में हैं। भारत बदल रहा है। देश को आगे बढ़ाने में, देश के चलाने वालों को नारी शक्ति का पूरा सम्मान करने पड़ेगा। ब्रह्माकुमारी में आत्मा का सशक्तिकरण और अच्छे इंसान बनाने का काम बहुत ही तेजी से हो रहा है। मेडिटेशन आत्मा की जागृति के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। ब्रह्माकुमारी की ओर से नारी शक्ति के सम्मान में जो कार्य किया रहा है वह इतिहास में लिखा जाएगा। भारत की पहचान उसकी भौगोलिकता, देश के नाम व सीमा से नहीं है बल्कि आध्यात्मिकता से है। इस परिसर में आध्यात्मिक ऊर्जा, उत्साह, शान्ति, सद्भाव का प्रेरणादाई अनुभव हो रहा है। संस्था का विश्व के 140 देशों में चेतना जागृति, ध्यान, आत्म सशक्तिकरण, राजयोग मेडिटेशन का अनवरत रूप से चल रहा कार्य साधारण नहीं है, यह परमसत्ता का ही कार्य है। परमसत्ता की सच्चाई अविभाज्य है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी आदि ने अपने तरीके से सत्य की खोज की। भारत ने दुनिया को युद्ध नहीं बल्कि बुद्ध दिया है। ब्रह्माकुमारीज व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करती है। चरित्र निर्माण के लिए आंतरिक परिवर्तन की शक्ति राजयोग से प्राप्त होती है। दादी जानकी भारत की विशिष्टता हैं। जैसी हमारी दृष्टि होती है, वैसी ही वृत्ति, कृति और सृष्टि का निर्माण होता है। पत्रकार आलोचना और व्यंग्य करें लेकिन ब्रह्माकुमारीज जैसे व्यक्ति निर्माण के कामों को भी बताएं।

मंगल में जीवन पर अनुसंधान की जगह जीवन में मंगल है कि नहीं इस पर अनुसंधान करें वैज्ञानिक: केंद्रीय राज्यमंत्री सारंगी

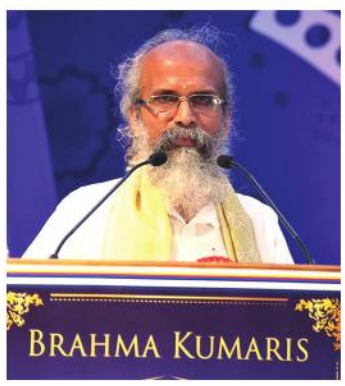

केंद्रीय राज्य पशुधन विकास, लघु, मध्यम उद्योग मंत्री प्रतापचंद्र सारंगी ने कहा कि मैं वैज्ञानिकों को कहना चाहूंगा कि मंगल में जीवन पर अनुसंधान करने की बजाय जीवन में मंगल है कि नहीं इस पर अनुसंधान करें। दुनिया में आज सबसे ज्यादा सद्भावना, शांति और प्रेम की जरूरत है जो आध्यात्म से ही आएगी। यूरोप में विज्ञान और आध्यात्म में प्रतिस्पर्द्धा है। हमारे देश में विज्ञान और आध्यात्म साथ चलता है। एक-दूसरे के पूरक हैं। विज्ञान बहुत गहरी रिसर्च है। इससे हम भौतिक तरक्की कर रहे हैं पर खुद को जानना आध्यात्म है। हम दुनिया को तो जान रहें हैं पर खुद को नहीं जान रहे हैं।

उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान बहुत ऊंचा है। ये सीधे परमात्मा से जोड़ता है। राजयोग मेडिटेशन ईश्वर से जोड़ता है। यहां का पूरा वातावरण प्रभावित करने वाला है। पहले पति-पत्नी के प्रति, बच्चे मां-बाप के प्रति अपने कर्तव्य का सहजता से पालन करते थे। आज के जमाने में बच्चे अपने माता-पिता के प्रति अपना कर्त्तव्य नहीं निभा रहे हैं, यही कारण है कि ऐसे कानून बनाना पड़ रहे हैं कि वह अपने कर्त्तव्यों का पालन करें। जब अपने कर्त्तव्यों को करवाने के लिए कानून बनाना पड़े तो समझ जाइए कि हमारा राष्ट्रीय चरित्र क्या हो गया है। प्रकृति के विरुद्ध हम कुछ करेंगे तो आपदा आती है। पर्यावरण का संरक्षण हम सभी को मिलकर करना होगा। आज प्लास्टिक और प्रदूषण मानव के लिए सबसे बड़ा खतरा है। हमारे प्रधानमंत्री सिंगल यूज प्लास्टिक नहीं उपयोग करने को बढ़ावा दे रहे हैं।

हम सबको इस कार्य में सहयोगी बनना होगा

ब्रह्माकुमारीज महिलाओं के संगठन ने समाज को सही दिशा देने का जो बीड़ा उठाया है उसमें हम सबको कंधे से कंधा मिलाकर इस कार्य में सहयोगी बनना होगा। मन की आसुरी वृत्तियों को समाप्त करने के लिए ईश्वर की वास्तविकता को समझने की जरूरत है। यहां आकर ईश्वरीय शक्ति की महसूसता हो रही है। ईश्वर ने यदि आपको इस लायक बनाया है तो आपके मन में सभी के प्रति यह समभाव होना चाहिए। कोई भेद नहीं होना चाहिए न समाज के प्रति, न देश के प्रति और न इंसान के प्रति।

➲ फग्गन सिंह कुलस्ते, केंद्रीय इस्पात राज्यमंत्री

सभी को अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी होगी

आध्यात्म और पर्यावरण समन्वय समय की मांग है। सरकार की ओर से चलाई जा रही योजनाओं को ब्रह्माकुमारी संगठन का समय अनुरूप पर्याप्त सहयोग मिल रहा है। इस भागीरथ कार्य में समाज के हर वर्ग को एकजुट होकर अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी होगी।

➲ अर्जुनराम मेघवाल,
केंद्रीय मंत्री, जल संसाधन, भारत सरकार

आध्यात्मिक शक्ति हमें सही दिशा दिखाती है

आध्यात्मिक शक्ति हमें सही दिशा दिखाती है और बुराईयों से मुक्त करती है। ऋषि-मुनियों ने भी इसका महत्व समझकर साधना की। राजयोग से जीवन में मन को गहन शांति मिलती है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन ब्रह्माकुमारीज़ का स्लोगन है। हम उस देश के वासी हैं जिसने सदा दिया ही दिया है।

➲ जी. कृष्ण रेड्डी, केंद्रीय गृह राज्यमंत्री

विकासशील देशों को आध्यात्मिक ज्ञान की जरूरत

हमने संकल्प लिया है कि नेपाल की जनता को कम से कम एक बार ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान से अवगत करवाएं, इसके लिए हम कार्यक्रम करेंगे। बुद्ध ने ढाई हजार साल पहले मन की शांति का पाठ पढ़ाया। जो देश खुद को सुपर पावर कहता है, वहां लोग सबसे ज्यादा आत्महत्या कर रहे हैं। नेपाल विकासशील देश है, पर हमारे यहां आत्महत्या की दर कम है, क्योंकि हमारे यहां ब्रह्माकुमारीज कार्य कर रही हैं। हमारे 72 जिलों में 1500 ब्रह्माकुमारीज सेंटर हैं। नेपाल जाकर ब्रह्माकुमारीज के और सेंटर खोलने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त करता हूं।

➲ बैजनाथ चौधरी, अधोसंरचना विकास मंत्री, नेपाल सरकार

हम सबका एक ही मकसद है, सभी सुख-चैन से रहें

भले हम शारीरिक रूप से अलग-अलग देशों, वर्गों से हैं लेकिन हम सभी एक ही परमात्मा पिता के बच्चे हैं। परमात्मा हम सबका है। इस भावना से ही विश्व का नवनिर्माण होगा। विश्व एक परिवार है। हम सबका एक ही मकसद है, सभी सुख-चैन से रहें।

- दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

सही व्यवस्था के लिए सत्ता में पारदर्शिता जरूरी

जब हम अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक नहीं होंगे तो व्यवस्था बिगड़ती है। सही व्यवस्था के लिए सत्ता में पारदर्शिता जरूरी है। सुशीला चौथी कक्षा तक पढ़ीं है और आरटीआई सहति कई कानूनों का खाका तैयार करने में भूमिका निभाई है।

- अरुणा रॉय, संस्थापक (मजदूर किसान शक्ति संगठन

पढ़े-लिखे समाज में हिंसा क्यों, चिंतन जरूरी

आदिवासी गांवों में हिंसा नहीं होती, बलात्कार नहीं होते जबकि पढ़े-लिखे समाज में हिंसा और बलात्कार बढ़ रहे हैं इस पर गंभीर चिंतन की जरूरत है। नक्सल प्रभावित महाराष्ट्र के गढ़चिरौली क्षेत्र में ब्रह्माकुमारी के साथ नशामुक्ति कार्य किया जा रहा है।

- पद्मश्री डॉ. रानी बंग, संस्थापक, सर्च संगठन

नशा मुक्ति अभियान बहुत ही सराहनीय पहल

ब्रह्माकुमारीज द्वारा माई इंडिया, ग्रीन इंडिया अभियान चलाया जा रहा है जो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बहुत ही सराहनीय कदम है। संस्था पूरे राजस्थान में सामाजिक सरोकार से जुड़े कई अभियान चला रही है। नशा मुक्ति अभियान बहुत ही सराहनीय पहल है। इससे हजारों लोगों के जीवन को नई दिशा मिली है। ग्लोबल हॉस्पिटल के माध्यम से गरीबों, असहाय और जरूरतमंद लोगों की सेवा की जा रही है जो हमारे लिए गौरव की बात है।

- देवजी एम. पटेल, सांसद, जालोर-सिरोही

12 लाख मतदाताओं को बताएंगे यहां की स्वच्छता

ब्रह्माकुमारीज कई वर्षों से स्वच्छता को जीवनशैली में धारण कर स्वच्छता अपना रही है और संदेश दे रही है। यहां आकर समर्पण भाव, एकता, शांति, स्वच्छता और सौर ऊर्जा का सदुपयोग करना सीखा है क्षेत्र के 12 लाख मतदाताओं को इसका महत्व बताएंगे।

- राजेश वर्मा, सांसद, सीतामऊ, उप

ताकि ये दर्द बच्चियों व महिलाओं को न झेलना पड़े

मैंने अपने जीवन में एसिड अटैक का दर्द झेला है। इसके बाद मैंने ठाना कि ये दर्द बच्चियों व महिलाओं को न झेलना पड़े, इसलिए अति जीवन फाउंडेशन की स्थापना की। ब्रह्माकुमारीज नारियों को आगे बढ़ाने में ऐतिहासिक कार्य कर रही है।

- प्रज्ञा प्रसून, फाउंडर, अतिजीवन फाउंडेशन बैंगलुरु

आज से मेरा जीवन सिर्फ मानव सेवा के लिए है

एक घटना ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया और मैंने उसी दिन श्मसान जाकर मुर्दे की राख माथे पर लगाई और संकल्प लिया कि आज से मेरा जीवन सिर्फ मानव सेवा के लिए है। 11 साल में छह हजार शवों का अंतिम संस्कार किया है।

- रवि कालरा, संस्थापक, अर्थ सेवियर्स फाउंडेशन

मानसिक प्रदूषण सबसे बड़ा प्रदूषण

पर्यावरण बहुत तेजी से प्रदूषित हो रहा है। जिसे रोकने के लिए हमें सबसे पहले अपने मन के प्रदूषण को रोकना होगा। ब्रह्माकुमारीज आध्यात्मिक ज्ञान से लोगों की चेतना, विचार, व्यवहार, भावना में आंतरिक बदलाव ला रही है। लोगों को मानसिक प्रदूषण दूर कर रही है। ये सबसे बड़ी सेवा है। सौर ऊर्जा को बढ़ाना होगा।

- गोलो पिल्ज, डायरेक्टर, सोलर वन थर्मल पावर प्रोजेक्ट, आबू रोड

विश्व रंगमंच

» **चाइना के कलाकारों ने दी वंदे मातरम् पर प्रस्तुति** | चाइना के कलाकारों ने वंदे मातरम् गीत पर मनमोहक प्रस्तुति देकर सभी को भारतीय संस्कृति की गरिमा और झलक दिखाई। साउथ अफ्रीका के डिसर्ट रोज ग्रुप के कलाकारों ने शांति...शांति...शांति.. ऊं शांति की ध्वनि को जब शब्दों से साकार किया तो हॉल में शांतिमय माहौल हो गया।

» **भारतीय संस्कृति के विभिन्न रंग देखने को मिले** | रशिया के रॉक सिंगर अल्बर्ट ने मेरा जूता है जापानी गीत पाकर और चाइना से आए कलाकारों ने देश मेरा रंगीला...रंगीला गीत नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी

» **आध्यात्मिक संगीत निशा** | मुंबई के प्रसिद्ध भजन सम्राट पद्मश्री अनूप जलोटा ने अपनी मधुर स्वर लहरियों से भक्तिमय संगीत का जादू बिखेरा। साथी गायक कलाकार कोयल त्रिपाठी ने भी सुर से सुर मिलाए। तबले पर सौरभ, गिटार पर हिमांशु और वायलिन पर राशिद अहमद ने संगत देकर आध्यात्मिक संध्या को चार चांद लगा दिए।

» **इनका किया सम्मान** | ग्लोबल समिट के दौरान न्यू इंडियन एक्सप्रेस के सहायक संपादक राजेश असनानी, पायोनियर के दीपक कुमार झा, नवभारत टाइम्स के चंद्रभूषण और गुलशन राय खत्री का सम्मान किया। साथ ही निर्भया वाहिनी की संस्थापक मानषी प्रधान, तरुणी की संस्थापक ममता रघुवीर, सारथी की संस्थापक कृति भारती का भी सामाजिक कार्यों में उल्लेखनीय योगदान के लिए ब्रह्माकुमारीज की ओर से लोकसभा स्पीकर ओम बिरला और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने ब्रह्माकुमारीज द्वारा चलाए गए मेरा भारत, हरित भारत अभियान में सराहनीय कार्य करने पर बीके भाई-बहनों का सम्मान मोमेंटो देकर किया।

इन्होंने भी रखे अपने विचार...

» नेपाल से पधारे सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस पुरुषोत्तम भंडारी ने कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान ही दुनिया को बदल सकता है। ये ज्ञान सभी तक पहुंचाने की जरूरत है।

» न्यूज 18 के समूह संपादक अमिश देवगन ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चलाया जा रहा विश्व व्यापी समाजिक बदलाव का अभियान ही स्वर्णीम दुनियां लाने में मददगार साबित हो सकता है।

» राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित आईपीएस विट्ठल जाधव ने कहा कि जैसे आर्मी अपना काम कर रही है, वैसे ही ब्रह्माकुमारीज संस्थान अपना कार्य कर रही है। आध्यात्म समय की मांग है।

» डेक्सटेरिटी संस्था के संस्थापक और सीईओ शरद सागर ने कहा कि डेक्सटेरिटी बच्चों के साथ देशभर में काम कर रही है। हमने सेवा को शिक्षा से जोड़ा है। ब्रह्माकुमारीज के भाई-बहन सेवा और त्याग की अद्भुत मिसाल हैं।

» सिकंदराबाद के इंपीरियल गार्डन के मैनेजिंग डायरेक्टर कैलाश चरण ने कहा कि आध्यात्म से विश्व का कल्याण होगा। हमें सभी को इसे अपनाना होगा।

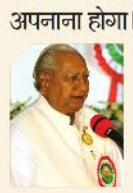

» ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्रह्माकुमार निर्वैर भाईजी ने सभी आये हुए मेहमानों को स्वागत करते हुए कहा कि आप अपने साकार परमपिता परमात्मा के कर्तव्य भूमि पर आये हैं। इसके लिए मैं आप सबों का बहुत अभारी हूं । अब इस धरा पर परिवर्तन का कार्य और तीव्र गति से होगा।

» हैदराबाद से पधारीं प्रज्वला कंपनी की संस्थापक पद्मश्री सुनीता कृष्णनन ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान महिलाओं की बड़ी सेना के जरिए लोगों को आत्मिक रूप से सशक्त करने में जुटी हुई है। साथ ही ये संस्था महिला सशक्तीकरण की मिसाल है।

» यूएसए से पधारीं मेरीलैंड की आध्यात्म प्रमुख म्यर्टल ऐनी ब्रिस्टल ने कहा कि यहां देह अभिमानी की बजाय आत्माभिमानी का भान है यदि उसे अंगीकार किया जाए तो विश्व में एकता, शांति और समृद्धि लाई जा सकती है। पश्चिमी देशों में भारत के आध्यात्मिक ज्ञान को बड़ी उम्मीद के साथ देखा जा रहा है। ये संस्था इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

» ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने अतिथियों के स्वागत करते हुए कहा कि आज दूनियां में एक सकारात्मक बदलाव की जरूरत है इस ओर निरंतर बढ़ते रहने के लिए सबको अध्यात्म के सहारे ही आसानी पूर्वक जाया जा सकता है। तभी हम स्वर्णीम संसार जल्द बना सकते हैं।

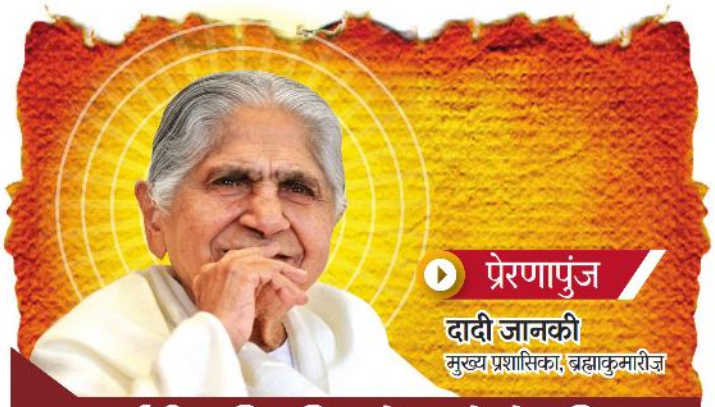

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

कर्मातीत स्थिति को पाने के लिए- फालो फादर कर हर बात में अनुभवीमूर्त बनो

शिव आमंत्रण आबू रोड। ज्ञान की गहराई ऐसा हो जो अंतर्मन स्वीकार कर ले। ड्रामा की हर सीन को साक्षी होकर देखते, सबके साथ पार्ट बजाते भी न्यारे प्यारे ऐसी अपनी स्थिति बनायें। फिर औरों को आप समान बनाने वा प्रेरणा देने के निमित्त बनते हैं। बाबा ने अशरीरी, विदेही और निराकारी स्थिति में रहने के लिए इशारा दिया हुआ है, तो बाबा के इशारे में कितनी कमाल है। फौरन करने को जी चाहता है। अशरीरी बनने से विदेही या देह के भान से परे होते हैं तब निराकारी स्थिति का अनुभव हो सकता है। जहां के रहने वाले हैं जिस बाप के बच्चे हैं, वह स्थिति बाप के डायरेक्शन को फालो करने से बनती है। फालो करना माना जो बाबा ने कहा वही करना।

हम बाबा के संकल्प की रचना हैं, उसके दृष्टि की रचना हैं। नजर से निहाल हो गए माना बाबा के हो गए। बाबा ने अपनी नजरों में छिपा लिया, बाबा ने हमें दुनिया की नजरों से बचा लिया। बाप की नजरों में समाने के लिए जैसे बाप निराकार है ऐसे हमारी स्थिति हो। देह भान से दूर हो।

विदेहीपन की स्थिति हो तो व्यक्ति और व्यक्त भाव से दूर रहने में मेहनत नहीं लगती है, परन्तु दूर रहना ही अच्छा लगता है, सेफ्टी है। कमाल है बाबा की जो कहता- बच्चे संबन्ध में रहो लेकिन बन्धनों से मुक्त रहो। कर्मबन्धनों में फंसी हुई आत्मा मुक्त हो जाए- कैसे करूँ, क्या करूँ.. यह माला फेरने वाली आत्माएं उसको बाबा ने समझ दी है कि ऐसे कर बच्चा। व्यक्त भाव में नहीं आओ, बोल-चाल, संकल्पों की इतनी शुद्धि हो तो अव्यक्त स्थिति बन सकती है।

अव्यक्त स्थिति तब तक नहीं है जब तक व्यक्त भाव खिंचता है, यह भाव नीचे उतारता है। तो इससे तुमको संभालना है। अभी संगमयुग चढ़ती कला का युग है। तो हर घड़ी यह स्मृति हो कि हमारी चढ़ती कला हो, उसमें भला है। खुद का भला तो भगवान ने कर लिया उसके हाथ में आ गए, परन्तु अभी सर्व का भला हो, वह शुभ चिंतन हमको आगे बढ़ाता है। संकल्प की शुद्धि ही अशरीरी और विदेही बनने में मदद करती है। हमारी स्थिति स्थान को भी पवित्र बना देती है। शुद्ध वायुमंडल वाला बना देती है। फिर स्थान भी हमारी स्थिति बनाता है। हमारे हर संकल्प में कई सेवाएं समाई पड़ी हैं। अच्छी स्थिति बनाने की सहज विधि है- अपने संकल्प की शुद्धि। अपने लिए भी और अन्य के लिए भी भावना शुद्ध हो तब जो स्थिति बनाने चाहते हैं वह बन सकती है।

तो हर अपने दिल दर्पण में देखो, जितना अपने आपको देखते हैं उतना अच्छा है। देखने की भी एक आदत होती है और किसी को न देख अपने को देखने की नेचर बन जाती है क्योंकि हमको संपूर्णता को जल्दी समीप लाना है। इसके लिए बाबा कहते बच्ची और कुछ नहीं , 'फालो फादर'। यह शब्द आते ही बाबा याद आता है। तो कभी भी हम अपने को बेसहारे महसूस नहीं करते हैं। कभी अपने को खाली महसूस नहीं करते हैं जो और किसी का सहारा पकड़े। हमको जो चाहिए वह यहीं से मिल सकता है। हमें जो चाहिए और किसी के पास मिल नहीं सकता है जो मिलता है बाबा से और मिला है। सिर्फ उसको बाबा ने कहा- इमर्ज रखो, यूज करो औरों को दान करो।

यहीं तन है, यही मन है परन्तु संगम की बलिहारी है। इस तन को भी चलाने वाला मैं आत्मा करावनहार होने से करनहार बन गई। तो मन भी सेवा में अच्छा साथी बन सकता है। मैं करावनहार हूं यह करनहार है। करनहार अभी आज्ञाकारी है। जैसे हमारा बाबा करावनहार है हम करनहार है। करावनहार बाबा के आगे हम करनहार को क्या करना है- 'जी बाबा'। तो तन भी कहेगा 'हां जी', मन भी कहेगा 'हां जी' और धन भी कहता है 'हां जी'। आवश्यकतानुसार धन भी आपेही आएगा। नहीं तो लोभी बन जाएंगे तो जिस बात की जिस घड़ी आवश्यकता है। वह आपेही सामने आता है। साथ-साथ सब संबन्ध-संपर्क वाले भी सब बातों में आपेही सहयोग देंगे। तो देखा है तन, मन, धन, संबंध सब 'हां जी' करते हैं। लेकिन स्वयं की इच्छाओं के अंदर से अविद्या हो जाएं। फिर हर बात में हम 'हां जी' करते हैं तो सब हमारे सामने सहज 'हां जी' करते यानी हाजिर हो ही जाते हैं।

दिव्यांग ने मनोबल से बनाया विश्व रिकॉर्ड

समस्या से समाधान निकाल एक नया आविष्कार करना इनका शौक

शख्सियत

दिव्यांग विमल को सम्मानित करते पूर्व राष्ट्रपति स्व. एपीजे अब्दुल कलाम

शिव आमंत्रण आबू रोड। अपनी व्यथा और करुणा को जीवन में एक नई दिशा देना कतई आसान नहीं होता। इसके लिए सकारात्मक सोच, कठिन मेहनत और अटूट विश्वास आवश्यक है। सिविल लाइन्स, इलाहाबाद के निवासी दिव्यांग विमल किशोर ऐसी ही शख्सियत हैं। जो अपनी आविष्कार के पीछे यह देखा है कि ऐसी भी कोई वस्तु जो लोगों के लिए समस्या बनती है, वह उनके लिए भी समस्या बन जाती है। और यही समस्या उनकी खोज का जन्मदाता हो जाता है। इस दिशा में उनका ध्यान मूल रूप से दिव्यांगों के उत्थान के लिए है। उन्होंने कई महीनों की मेहनत के बाद दुनिया की सबसे छोटी कार, हेलीकॉप्टर, पतंग, चरखा और बल्ला विकेट जैसे कई तरह की चीज बना डाली हैं। पैर के कारण स्थायी विकलांगता के शिकार विमल ने दिव्यांगों की तकलीफ महसूस कर स्कूटी से कार बनाने की कोशिश शुरू की थी। इस कार को अब वह दिव्यांगों, महिलाओं और बुजुर्गों के लिए बनाने जा रहे हैं। अपनी इस उपलब्धि को विमल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम को समर्पित करते हैं। और ऐसी खोज में एकाग्रता के लिए मेडिटेशन को श्रेय देते हैं। शिव आमंत्रण पत्रिका से खास बातचीत में उन्होंने अपने जीवन के कई अनुभवों को साझा किया-

> विमल किशोर का मानना है कि आप अपनी विशेषताओं और एकाग्रता को मजबूत बनाए रखने के लिए सकारात्मकता के साथ रोजाना मेडिटेशन के अभ्यास को जीवन में अपनाएं। मेडिटेशन से हमें मानसिक ऊर्जा मिलती है। यदि आपक मन स्वस्थ है तो सब संभव है।

बनाई लैलो नामक छोटी कार

विमल ने बताया कि मेरा बिजनेस है। मेरे पास मारूती कार थी, जिसे चलाने में तकलीफ रहती थी तो हमने स्कूटी खरीदी। स्कूटी का जो रूप दिया है, उसे देख लोग हैरान हैं। स्कूटी को कार बनाने के लिए हमने दिन-रात एक कर दिया और अपने तीन महीने के अथक प्रयास के बाद 'लैलो' नामक कार को सड़क पर उतार दिया। यह छोटा-सा है लेकिन विचित्र कार है। जब इलाहाबाद की सड़कों पर गुजरता है तो लोग बड़े अचरज से देखते हैं। देखने वालों की निगाहें यह कहती है कि काश मेरे पास भी ऐसी कार होती।

ऐसे बनाई छोटी कार

हमने 'लैलो' कार कि बॉडी को एसीपी से तैयार किया है। इसकी चादर काफी मजबूत होती है। आज कल मॉल्स में इनका इस्तेमाल किया जाता है। 'सोलर पैनल' को कार की छत पर लगाया गया है, जिससे बैट्री चार्ज होती है। दिव्यांगों को कोहरे के समय परेशानी न हो, इसका ख्याल रखते हुए 'लैलो' कार में 'फॉग लाइट' का इस्तेमाल किया गया है। एंबेसेडर के डोर हैंडल, वाइपर और ऑल्टो के शीशे 'लैलो' में इस्तेमाल किए गए हैं। इस कार में हार्न के लिए सायरन का इस्तेमाल किया गया है। 'लैलो' कार का बैलेंस बना रहे, इसके लिए दो अतिरिक्त पहिए लगाए गए हैं। यानी कार में कुल चार पहिए हैं। मेरा यह मानना है कि जीवन में एक मुकाम हासिल करने के लिए पढ़ाई और कॉलेज की डिग्री हो ही यह जरूरी नहीं है। लेकिन हां, प्रतिभा का होना तो निश्चित रूप से आवश्यक है। 'लैलो कार' जब हमने बनाई तो लगभग 86 लाख लोगों ने इसे पसंद किया।

बाइक के इंजन से बनाएंगे अगली कार

मेरा दावा है कि यह स्वनिर्मित 'लैलो' कार भारत की सबसे छोटी कार है। दिव्यांग जिसके दोनों हाथ काम करते हों, उन्हें इस कार को चलाने में कोई परेशानी नहीं होगी। उन्होंने बताया कि अगर सरकार सहयोग करेगी तो, अगली कार बाइक के इंजन से बनाएंगे, जिसमें लागत थोड़ी कम आएगी। फिलहाल इसकी लागत 90 हजार रुपए है। दुनिया का सबसे छोटा हेलीकॉप्टर एवं पावर बैंक भी हमने बनाया, जिसे हमारे पूर्व राष्ट्रपति कलाम साहब ने देखने के बाद काफी प्रशंसा की। 'लैलो कार' कुछ लोगों के सामने आने के बाद कार कंपनियों से हमारी पत्राचार भी हुई। टाटा कंपनी के साथ ही कुछ और कंपनी वालों ने बायोडाटा भी मांगा है। यह गाड़ी पेट्रोल से ही चलती है लेकिन इसके कुछ पार्ट्स सोलर सिस्टम से चलते हैं।

पोलियो को हराया, बने गैजेट गुरू

मुझे छः माह की उम्र में ही पोलियो हो गया था। लोगों को लगता था कि यह लड़का शायद ही कभी अपने पैरों पर खड़ा हो पाए। लेकिन 'गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड' में अपना नाम दर्ज करा आज हम 'गैजेट' गुरुके नाम से जाने जाते हैं। गृहस्थ में रहते हुए सिविल लाइन्स में एक कॉफी की दुकान चलाता हूं, जो 'किशोर कैफे' के नाम से जाना जाता है। मैं बचपन से ही विज्ञान की ओर आकर्षित था और उसी का परिणाम है कि आज हम इस मुकाम पर हैं।

दुनिया का सबसे छोटा बल्ला व विकेट बनाने का दावा

हमने सबसे छोटा बल्ला व विकेट का जोड़ा बना कर विश्व कीर्तिमान स्थापित करने का दावा किया है। लकड़ी के बने विश्वकप एक इंच का, ट्वेंटी-20 विश्वकप का एक इंच का। विश्व में इससे छोटा बल्ला अभी तक किसी ने नहीं बनाया है। इस तरह हमने 7.5 मिमी का बल्ला बनाया है। इसके पहले अमृतसर के जसपाल सिंह ने 6 सेमी के बल्ले पर विकटों का जोड़ा व गेंद बना कर वर्ल्ड रिकार्ड बनाया गया था। इसके बाद पटना के क्रिकेट प्रेमी पवन 4 सेमी का जोड़ा बना कर विश्व रिकार्ड स्थापित किया था। इलाहाबाद के ही अमित ने भी 2.1 सेमी का बल्ला, विकेट बना कर इतिहास रचा था। विश्व का सबसे छोटा महात्मा गांधी का चरखा बनाने का भी दावा किया है। 2.5 सेमी का गांधी जी का चरखा हमने बनाया है, जो दुनिया का सबसे छोटा चरखा है। दो पहिया वाहन में अपनी ही गाड़ी से दूसरी तथा अपनी गाड़ी में हवा का यंत्र बना कर सभी को अंचभित कर दिया हूं। मैं युवाओं से उम्मीद करता हूं कि वे अपने इंट्रेस्ट के कामों ,खेलों या किसी भी क्षेत्र में अपने रुचि से, खुशी से, लगन से, मेहनत कर दुनिया में कुछ निरंतर नया करने का प्रयास करें, ताकि खुद और आने वाली पीढ़ी को हम अधिक से अधिक सुख पहुंचा सकते हैं।

लिम्का बुक और गिनीज बुक में भी दर्ज कराया नाम

आज अपनी बनाई हुई चीजें 'लिम्का बुक' व कई अन्य जगहों पर दर्ज हैं। हमने विश्व की सबसे छोटी पतंग और लटाई बनाने का दावा किया है। पतंग एक इंच की है जबकि लटाई की लंबाई 5.8 मिमी और चौड़ाई 15 मिमी है। बचपन से ही छोटी-सी छोटी चीजों पर मेरा काफी ध्यान रहा है। कंप्यूटर की जानकारी हो या इलेक्ट्रोनिक्स की, इससे संबंधित लोगों से भी मैं धीरे-धीरे मिला। बचपन में जब पिताजी कोई भी चीज घर में लाते थे तो, उसे खोलकर देखने की जिज्ञासा बनी रहती थी। बचपन की आदतें आज लोगों के बीच सकारात्मक रूप में देखी जा सकती है। चीजों से खेलने और उन्हें जोड़-तोड़ कर कई चीजें बनाने का शौक मुझे बचपन से था। बाद में लोगों से वाहवाही मिली तो, इस शौक को पेशा बना लिया। चार भाई और एक बहन में तीसरे नंबर पर विमल का शौक तरह-तरह की चीजों का निर्माण करना है। स्नातक पास और अविवाहित विमल कम खर्च में ज्यादा से ज्यादा चीजें बनाना और बना कर लोगों को उपलब्ध कराना चाहते हैं।

कुरुक्षेत्र जिला जेल में 1994 से कैदियों के लिए चल रही है ईश्वरीय पाठशाला...

कुरुक्षेत्र जिला जेल में आई आध्यात्मिक क्रांति बंदियों को सिखाया जा रहा राजयोग मेडिटेशन

- सकारात्मकता अपनाने से बदल रहा जेल का माहौल
- कारागार का माहौल बदलकर शांतियुक्त-प्रेमयुक्त हो रहा है

शिव आमंत्रण कुरुक्षेत्र/हरियाणा। अगर सही मायने में देखा जाए तो अपराध का मूल कारण नकारात्मक विचारधारा है। इस विचारधारा को समाप्त करने की दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान अहम् भूमिका अदा कर रही है। हरियाणा के कुरूक्षेत्र कारागृह में कैदियों के व्यवहार में महत्वपूर्ण सुधार लाने का श्रेय ब्रह्माकुमारीज़ को दिया जाता है। इस जेल में ज्ञान योग सेवा की शुरूआत 1994 में हुई।

वर्तमान समय में 25 से 30 कैदी योग एवं ध्यान लगाते हैं और मुरली महावाक्य भी सुनते हैं। परमात्मा ने उन कैदियों की सारी पीड़ाएं हर ली है। इस ईश्वरीय कार्य में वे सभी तन-मन-धन से समर्पित करने के लिए तैयार हैं। रोज राजयोग का अभ्यास कर अमृतवेले से अपनी सुंदर दिनचर्या के साथ अपनी जीवन जी रहे हैं।

कई बंदी ऐसे हैं जो पहले दुःख और पश्चाताप में अपने किए गए कर्मों के कारण जी रहे थे अब आध्यात्मिक ज्ञान मिलने से खुशी-खुशी जीवन गुजार रहे हैं। क्योंकि उन्हें यह ज्ञान हो गया है कि जीवन में हमारे सामने आता है वह इसी जन्म या पिछले जन्मों के कारण हिसाब-किताब हमें पूरा करना होता है।

1994
से जेल ईश्वरीय सेवाओं का अगाज हुआ

25-30
कैदी रोजाना सुनते हैं मुरली महावाक्य

25-30
कैदी भी अपने वार्ड में करते मेडिटेशन

15-30
कैदियों ने बाहर आकर कर रहे ईश्वरीय प्रचार

बंदियों के व्यवहार में आया आश्चर्यजनक बदलाव

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय कुरुक्षेत्र की ओर से जिला कारागार कुरुक्षेत्र के पुरुष/महिला बन्दियों के मानसिक तनाव को कम करने तथा उनको स्वस्थ रखने के उद्देश्य से जेल में बन्दियों को आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने के लिए नियमित रूप से उक्त केन्द्र की ओर से योग एवं ज्ञान शिविर लगाये जा रहे हैं। उक्त केन्द्र द्वारा इस कारागार में बन्दियों के पूर्ण उत्थान एवं मानव कल्याण भी किये जा रहे हैं जिससे उन कैदियो के व्यवहार में आश्चर्यजनक बदलाव आया है। इस सराहनीय कार्यों के लिए जेल प्रशासन सदैव ब्रह्माकुमारीज संगठन का आभारी है और जेल प्रशासन भविष्य में भी आप सभी से इसी प्रकार के सराहनीय सहयोग की उम्मीद रखता है।

डॉ. संजय सिंह, जेल अधीक्षक, जिला कारागृह कुरूक्षेत्र, हरियाणा

कैदियों के चेहरे पर मुस्कान देख बेहद खुशी मिली

जेल में मुझे ईश्वरीय सेवा का अवसर मिला यह मेरा सौभाग्य है। हमने कैदियों को ईश्वरीय ज्ञान के साथ जो उनमें बदलाव देखा वह आश्चर्यजनक है कि वे अपने को बंदी न समझ बड़े भाग्यवान समझते हैं। अब वे जेल में आने का जिम्मेवार किसी और को नहीं खुद को ही मान रहे हैं। हरेक तरह की बदले के भाव को बदल प्रेम और सहयोग के भाव में वे लोग जीना पसंद कर रहे हैं। उनके चेहरे से एक गजब की मुस्कान के साथ आशाओं की किरण नजर आती है।

बीके बलवन्त, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

राजयोग अपनाकर जीवन में चमत्कार होते देखा

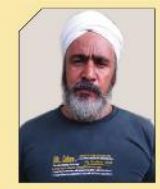

मैं विकारों से ग्रसित होकर क्रोध जैसे कई बुराई में लिप्त था। एक दिन मेरे गांव में झगड़ा इस कदर बढ़ा कि गोलियां लाठी चलने के बाद कई लोग घायल हुए जिसके केस में मुझे जेल आना हुआ जहां आकर मानसिक रूप से बेहद परेशान रहने लगा रातों की नींद गायब हो गई। मेरे राजनीतिक संबंध अच्छे होकर भी कोई मदद नहीं मिला, तब समझ नहीं आ रहा था कि आखिर क्या करूं? कुछ दिन बाद वहां मुझे ब्रह्माकुमारीज़ के सत्संग में जाने का सौभाग्य मिला जो मुझे बहुत अच्छा लगा। योगा अभ्यास के साथ मुझे नींद आने लगी और काफी शांति मिली। कई दिन मुझे दिव्य साक्षात्कार भी हुए। तब मैंने अपनी जमानत के लिए श्रेष्ठ संकल्प करने लगा, तभी यह संकल्प चमत्कारिक रूप में सिद्ध होकर अगले केस की तारीख में हमारा जमानत हो गया। जेल से बाहर आने के बाद चमत्कार के बारे में हमने अपनी धर्मपत्नी को जब बताया तब वे भी हमारे साथ इस ईश्वरीय ज्ञान में चलकर आज घर में ईश्वरीय पाठशाला चलाने लगी। तब मेरे जीवन में इतना खुशियां आयी कि जिनके वजह से मैं जेल गया था उनको मैं राजयोग में सकास देने लगा तब कुछ दिन बाद वे मेरे घर आकर कहने लगे कि क्यों न हम झगड़े केस को खत्म कर प्यार से रहें। आखिर ऐसा ही हुआ।

मनजीत सिंह, कैदी, कुरुक्षेत्र हरियाणा

महिला कैदी होकर भी आजीवन कारावास की सजा को आध्यात्मिकता के बल से किया खुशनुमा जीवन

मेरी नई-नई शादी हुई थी शादी के तीन चार साल बाद ही मेरी देवरानी ने आत्महत्या कर ली। उनके पियर वालों ने दहेज प्रथा पर आरोप लगाकर पूरे परिवार को फंसा दिया। इस कारण पूरे परिवार को जेल जाना पड़ा। मेरे परिवार वालों ने सोचा कि मैं अभी नई-नई बहू, जेल में जाएगी तो गलत प्रभाव अर्थात गलत संदेश समाज में जाएगा, इसलिए उन्होंने मुझे फरार रखा। पूरे परिवार के लोग दो-चार महीने रह-रह कर जेल से वापस आ गए। लेकिन मैं फरार होने के कारण मुझे 4 साल तक जेल में अपने दिन बिताने पड़े। जब मैं 3 साल झालावाड़ की जेल में रह रही थी, तब मेरी केस फाइल नहीं मिलने के कारण मुझे आजीवन कारावास दे दिया गया। तभी मुझे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का परमात्म परिचय के साथ राजयोग मेडिटेशन सीखने को मिला, जिससे एक नया जीवन जीने की प्रेरणा मिली। एक साल जयपुर जेल में रही। जेल में रहकर परमात्मा पिता को बहुत याद करती थी और सभी माताओं-बहनों को मुरली महावाक्य भी सुनाती थी। मुझे जेल में बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव होते थे। ब्रह्माकुमारी दीदी बीच-बीच में आती रहती थी और मेरी पालना भी करती रहीं। मेरे पति सेंटर से मुरली फोटो कॉपी करा कर मुझे दे जाया करते थे। पूरे जेल में सेंटर जैसा माहौल होता था। मुझे परमात्मा से टचिंग होता रहता था कि बच्चे चिंता मत करो मैं बैठा हूं...सब ठीक हो जाएगा। मैं 2 बजे अमृतबेले से उठकर योग करती थी। परमात्मा ने मुझे वरदान दिया विजयी आत्मा भव। मुझे जेल में रहते हुए भी किसी भी प्रकार का दुःख नहीं हुआ। मैं बहुत नियमित परमात्मा पिता की याद में मेडिटेशन करते हुए धैर्यता और पवित्रता के साथ याद करती थी। सभी लोग मुझे बहुत अच्छे से रखते थे। मैं बाबा को यही कहती हूं कि मेरे साथ पिछले जन्म के कुछ कर्म भोग थे जो हिसाब -किताब के रूप में पूरे हो गए। अब मैं परमात्मा बाबा को कोटी-कोटी धन्यवाद देकर वाह-वाह का गीत सदा गाती रहती हूं। अब मैं बाबा से वादा किया कि मैं सदा पवित्र जीवन जिऊंगी और प्रतिदिन मुरली महावाक्य सुनने सेंटर जाऊंगी। मेरे पति भी ज्ञान में हैं अभी मुझे मात्र एक महीने ही हुए हैं जेल से बाहर आए हुए।

सरोज अकलेरा, महिला कैदी, झालावाड़ राजस्थान।

राजयोग के प्रयोग से कैदियों को असीम शक्ति मिली

मैं पिछले 25 वर्षों से जेल में सेवाएं दे रहा हूं। मैं स्नेह भावना से कैदियों को अपना भाई व दोस्त मानता हूं। मैंने देखा है कि जेल में व्यक्ति को स्वचिन्तन का अवसर मिलता है तो वो अपने जाने-अनजाने में किये गये पाप कर्मों का प्रायश्चित करके अपने अन्दर एक सकारात्मक सोच लाकर अपने जीवन को सुधारने की दिशा में अग्रसर होता है। उसके जेल में आने से समाज को भी गलत कर्म ना करने का संदेश जाता है। आज के समाज में भागदौड़ वाले जीवन से जेल में रैस्ट का अनुभव करते हुये वह आत्म चिंतन (स्वचिंतन) करता है तो ब्रह्माकुमारी संगठन के भाई -बहनों द्वारा दिया हुआ ज्ञान उसकी सबसे बड़ी मदद करता है। अब वह व्यक्ति ये भली-भांति जान जाता है कि मेरे ही द्वारा कुछ पास्ट में किये गये कर्मों के फलस्वरूप मुझे दुःख या सुख मिल रहा है। मेरे ही कर्म मुझे यहां ले आये हैं तो फिर वो इंसान व भगवान को दोष देना बंद कर देता है और अपने कर्मों पर अटेंशन देना शुरू कर देता है। वह अपने को आत्मा निश्चय कर परमात्मा को यथार्थ रीति पहचानकर जब उसे याद करता है तो उसे एक असीम शान्ति या सुख का अनुभव होने लगता है। उसके मन में नकारात्मक के स्थान पर सकारात्मक विचार चलने लगते हैं। धीरे -धीरे दिव्य बुद्धि होने के कारण वह दुश्मन को भी दोस्त बना लेता है। बदला ना लेकर बदलने की भावना से नुकसान में भी फायदा देखने लगता है। अन्त में मुझे एक कहावत याद आती है कहते है कि गालिब सारी उम्र एक गलती करता रहा धूल चेहरे पर थी, आइना साफ करता रहा। किसी शायर ने अच्छा कहा है कि इन्सान गलतियों का पुतला है। गलतियों से तुम भी जुदा नहीं, गलतियों से हम भी जुदा नहीं, खुदा तुम भी नहीं खुदा हम भी नहीं, भीतर झांकता तू भी नही भीतर झांकता मैं भी नहीं, दोष जमाने को देते हैं कहते वातावरण ही ऐसा है वरना सच तो यह है फितरत तेरी भी ऐसी नहीं फितरत मेरी भी ऐसी नहीं क्योंकि सुख-शांति, आनन्द-प्रेम हर आत्मा को पसंद है।

बीके अशोक सैनी, कुरुक्षेत्र हरियाणा

सूचना

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य 110 रुपए
तीन वर्ष 330
आजीवन 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 9414172596, 9413384884
Email shivamantran@bkivv.org

संपादकीय

तन की बीमारी से घातक है मन की बीमारी

आजकल बढ़ते प्रदूषण तथा बदलती जीवनशैली से नयी-नयी बीमारियों का जन्म हो रहा है। परन्तु इनमें से एक ऐसी बीमारी है जो तेजी से बढ़ रही है वो है मन की बीमारी। यह बीमारी शरीर की बीमारी से ज्यादा घातक है। क्योंकि शरीर की बीमारी का तो इलाज सम्भव है। लेकिन यदि मन की बीमारी हो जाये तो उसका इलाज कठिन हो जाता है। क्योंकि इस बीमारी का इलाज दवाओं के बजाए सोच पर निर्भर है। यदि हम लगातार नकारात्मक सोचते रहेंगे तो उस पर कोई भी दवा असर नहीं करती है। क्योंकि इस बीमारी का जन्म थॉट प्रोसेस से जुड़ी हुई है। इससे ही तनाव, चिंता और डिप्रेशन आदि बढ़ता है। भले ही हम मेडीसिन का उपयोग करते हैं लेकिन इससे मन की बीमारी ठीक नहीं होती है। मन की बीमारी को ठीक करने के लिए सकारात्मक सोच, वृत्ति, समझ, दृष्टिकोण आदि होती है। इसलिए आज वैज्ञानिकों ने भी कहा है कि 70 प्रतिशत बीमारियों मानसिक होती हैं। इसलिए मन को स्वस्थ रखना जरूरी है। तन की बीमारी से घातक मन की बीमारी है। इसलिए मन की बीमारी को ठीक रखने के लिए सौ प्रतिशत प्रयास मेडीसिन के साथ मेडिटेशन से करना चाहिए। राजयोग ध्यान इसमें बहुत ही सहायक होता है।

परमात्म शक्ति ने तेंदुआ रूपी काल से छुड़ाया गर्दन

मेरी कलम से

बीके शिवदास, कृषक]
ग्राम-आमदा, जिला-बड़वानी, मध्यप्रदेश।

मेरा पुत्र घर के अंदर सो रहा था। वह मेरी आवाज सुनकर बाहर आया और सीन देखकर चिल्लया। जब तेंदुआ मेरी गर्दन पकड़ रखा था तब मैंने परमात्मा की याद में संकल्प किया

मैं एक कृषक हूं। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान में पिछले 22 वर्षो से अध्ययनरत हूं। समयानुसार सब कुछ ठीक चल रहा था लेकिन अचानक एक दिन अपने खेत के निवास स्थान पर ख्ब्रात्री 9:30 बजे सोया हुआ था तभी एक जंगली तेंदुआ जो मेरी खटिया के पास आया और मेरी गर्दन पकड़कर जोर से उठा लिया। नींद में होने के कारण मुझे कुछ समझ में नहीं आया। कम से कम चार फीट दूर घसीट कर ले गया। उसके बाद मुझे समझ में आया कि यह वही जंगली जानवर है जो कुछ दिनों पहले गांव के नजदीक एक 17 वर्षीय बालिका को मार चुका था। यह बात मेरी बुद्धि में स्पर्श होते ही मैं जोर से चिल्लया। मेरा पुत्र घर के अंदर सो रहा था। वह मेरी आवाज सुनकर बाहर आया और सीन देखकर चिल्लया। जब तेंदुआ मेरी गर्दन पकड़ रखा था तब मैंने परमात्मा की याद में संकल्प किया कि मैं ज्योति बिंदु अविनाशी आत्मा, जिसे तेंदुआ मार नहीं सकता। मुझे अपने शिव पिता पर पूरा भरोसा था यह सोचकर आगे हाथ बढ़ा कर जोर लगाया। सामने एक एंगल पाया उसे जोर से पकड़ा जिसके कारण मेरी गर्दन तेंदुआ के मुख से झटके में अलग हो गया। मैं उठकर खड़ा हुआ और गर्दन से निकल रहा खुन पोंछने लगा। इसके बाद भी तेंदुआ 10 फीट की दूरी पर खड़ा रहा लेकिन दुबारा आक्रमण नहीं कर पाया। तभी मेरे पुत्र ने सहयोग करते हुए मुझे घर के अंदर ले जाकर दरवाजा बंद कर लिया। तब हमने खिड़की से देखा कि तेंदुआ बकरी पर हमला किया। बकरी का आवाज सुनकर मेरा बेटा एक लोहे की बाल्टी तेंदुआ की ओर फेंका तब तेंदुआ बकरी को छोड़ आगे भागा। तब तक बकरी मर चुकी थी। मेरे बच्चे ने सभी सगे संबंधियों को सूचना दे दिया। तब तक गर्दन से अनवरत खून बह ही रहा था तब वे लोग आकर मुझे तत्काल नजदीकी अस्पताल ले गये। जहां मुझे 27 टांके लगाकर बड़ा अस्पताल में रेफर कर दिया गया। जहां मुझे चार दिन तक भर्ती रहना पड़ा। लोग कहते थे कि अब यह नहीं बचेगा, उनका मानना है कि अगर मैं उसी इलाके में आगे रहा तो फिर वही तेंदुआ मुझे ढूढ़कर मार डालेगा क्योंकि मेरा खून का सुगंध से वह मुझे फिर से खोजकर मारने में कामयाब हो जाएगा। इसी बात को ध्यान में रखकर मैं मध्यप्रदेश से राजस्थान ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय स्थित आश्रम में सेवाअर्थ आ चुका हूं। जबकि साक्षात मेरा पिता शिव परम्मात्मा ने मेरी रक्षा कर एक नया जीवन प्रदान किया है इसलिए अब मैं अपना यह नया जीवन ईश्वरीय कार्य में ही बिताना चाहता हूं।

बोध कथा जीवन की सीख

खुद की शक्तियां याद आई

एक देश में एक बहुत शक्तिशाली हाथी था। वह हाथी इतना बलवान था कि उस देश के राजा ने उस हाथी के बलबूते पर बहुत सारे युद्ध जीते थे और एक दिन कई लड़ाइयां लड़ते-लड़ते वह हाथी बूढ़ा हो गया। अब वह शक्ति व सामर्थ्य उसमें नहीं रहा परंतु फिर भी राजा को वह बहुत बहुत प्रिय था और उस हाथी का जो महावत था वह भी बूढ़ा हो गया था और अब सेवानिवृत्त हो चुका था और एक दिन वह हाथी ऐसे ही वन में विहार करते करते एक कीचड़ में फंस गया और कीचड़ में अंदर धंस्ता चला गया। सारे नगर निवासी एकत्र हुए। सबको पता था इस हाथी की महिमा का। सबको दुख हुआ कि कोई तो इस हाथी को बचाए। कई सारे सैनिक आए, लोग आए। सब ने बहुत प्रयत्न किए परंतु वह हाथी इतना बड़ा था और बीचो बीच फंस चुका था कैसे निकाले उस हाथी को? कईयों ने सोचा उसको तीर मारे जाए तो शायद उसकी वजह से वह बाहर निकल जाए परंतु उससे उसे और ही पीड़ा हुई और उसके शरीर से और ही रक्त बहा और वह वही रोता रहा। बात राजा तक पहुंची और राजा वहां उसे देखने आया उसे भी दुख हुआ कि कैसे हाथी को बाहर निकाले इस कीचड़ से इस दलदल से? सारे प्रयत्न हो चुके थे। राजा को याद आई उस बूढ़े महावत की जो इस हाथी को पालता था और उसे बुलाया गया और उससे पूछा गया क्या करें, कैसे करें कैसे साथी को बाहर निकाले? उस बूढ़े महावत ने कहा मेरे पास एक योजना है,एक उपाय है ढेर सारे सैनिक बुलाए जाए जैसे किसी युद्ध की तैयारी की जाती है।

उस समय जैसे सारे सैनिक इकट्ठे किये जाते हैं वैसे ही सारे सैनिक आ जाए, ढोल नगाड़े बजाए जाए जैसे युद्ध के समय बजाए जाते हैं, शंख ध्वनि की जाती है वैसे शंख ध्वनि की जाए और इसके कहने अनुसार बहुत सारे सैनिक आ जाते हैं जैसे किसी युद्ध में जा रहे हैं। वैसा ही आवाज! अचानक वह हाथी जो दुखी है, रो रहा है, वह आवाज सुनता है और उसके जमाने की सारी यादें युद्ध कौशल याद आ जाता है और अचानक उसकी शक्ति फिर से जागृत हो जाती है। वही ऊर्जा फिर से आ जाती है। वहीं रणभूमि की आवाजें, तलवारों की आवाजें और एकदम से ऐसे बाहर आ जाता है जैसे बिना किसी मदद के। जैसे वह वहां फंसा ही नहीं था। ऐसा क्यों हुआ? क्या कहेंगे? उसे अपनी ताकत शायद भूल गई हो अब उसे याद आ गई और वह माहौल बन गया। जैसे ही माहौल बन गया अंदर की सुप्त चेतना जागृत हो गई।

संदेशः हमें एक दूसरे की शक्तियों को उस हाथी के महावत और रामायण के जामवंत के तरह याद दिलाना चाहिए जिससे असंभव कार्य को भी संभव किया जा सकता है। तब उस हाथी और हनुमान की भांति निश्चित रूप से विजय पा सकते हैं।

खुद की सोई हुई छुपी शक्तियों को जागृत करना है

हम मनुष्य के अंदर बहुत सारी असीम शक्तियां सोई हुई छुपी है जिसे संसार के किसी और कोने में ना छुपा कर हमारे ही मन के अंदर छुपा दिया गया है जिसे हमें पहचान कर उसे जागृत करना पड़ेगा नहीं तो मृग के भांति कस्तुरी के सुगंध के लिए इधर-उधर भटकते रह जायेगें।

आध्यात्म की नई उड़ान...

डॉ. सचिन]
मेडिटेशन एक्सपर्ट

धर्म भी सूक्ष्म चेतना को ठीक करने का एक चिकित्सा है

चिकित्सा अर्थात वो चिकित्सा जो इस रुग्ण चेतना को फिर से ठीक कर दे। उसमें जो दुर्बलता है, उसमें जो विकार हैं उसमें जो हीन भावना है वह दूर हट जाए। तो हम मनुष्य का मन बहुत शक्तिशाली जाता है। ऐसा कुछ नहीं संसार में जो हम नहीं कर सकते। ऐसी अनंत शक्तियां इस मन में समाई हुई हैं। अनंत शक्तियां हम सब में हैं अपनी शक्तियों को जानो जैसे वह हाथी अपनी शक्तियों को जान गया और दलदल से बाहर आ गया। ऐसे ही हम भी अगर किसी दलदल में फंसे हैं, कमजोरी के संस्कारों में फंसे हैं तो उस दुर्बलता के दलदल से स्वयं को बाहर निकालना है।

स्वयं की शक्ति को याद कर तुम भी खुद को निकालो

महात्मा बुद्ध यह **हाथी वाला बोध कथा** अपने सन्यासियों से कहा करते थे। आत्मा में सुप्त चेतना है। सुप्त चेतना को जगाओ इस हाथी से सीखो। इस हाथी का नाम था बुद्रुक हाथी। कौशल देश का राजा कभी बौद्ध काल में था जब उसके पास यह हाथी था। जैसे जैसे उस हाथी ने रणभेरी सुनी और अपने आप को कीचड़ से बाहर निकाला। हे भिक्षुओ स्वयं की शक्तियों को याद कर तुम भी खुद को बाहर निकालो।

हमारी शक्तियां कहीं और नहीं हमारे ही मन के अंदर छुपी हुई हैं

जो छिपा हुआ शक्तियों का खजाना हमारे अंदर है उसे स्वयं स्वयं को ही जानना है यही सबसे बड़ी उपलब्धि होगी। यही सबसे बड़ा संशोधन, खोज, अविष्कार अनुसंधान है। हमारे मन में अनंत शक्तियां हैं। अनेक काल्पनिक कहानियां हैं जैसा कि एक बार कई देवता एकत्रित हुए और सोचा कि मनुष्य की सब इच्छाएं कहीं पूर्ण न हो जाए तो ऐसी शक्तियां कहां रखी जाए? तो उसे ऐसी जगह रखना चाहिए जहां मनुष्य उसे ढूंढ ना पाए। तब किसी देवता ने कहा पहाड़ की चोटी में रख दो, दूसरे ने कहा नहीं मनुष्य वहां पहुंच जाएगा, किसी ने कहा आसमान के ऊपर रख दो, किसी ने कहा नहीं मनुष्य वहां पर भी पहुंच जाएगा, एक देवता ने कहा समुंदर की गहराई में रख दो पर सब ने कहा नहीं शायद मनुष्य वहां भी पहुंच जाएगा, फिर क्या करें किसी ने कहा गुफाओं में रख दो एक देवता था जो अंत में सामने आया उसने कहा नहीं इन सब जगहों पर मनुष्य पहुंच जाएगा हमें ऐसी जगह रखनी है जहां जो सोचे भी नहीं कि यहां शक्तियां हैं। यह शक्तियां उसी के मन में छुपा के रख दो ताकि वह शक्तियों को बाहर ढूंढता रहे और उसके अंदर ही वह कस्तूरी व शक्तियां हैं वह जान ही न पाए, वह सारी शक्तियां, अनंत शक्तियां यहां छिपी है।

अनलॉक द माइंड पावर

हमें पावर को खोजकर लक्ष्य तक पहुंचना है यही मेरा स्वरूप है मैं बहुत शक्तिशाली आत्मा हूं। यह जो शरीर रूपी आवरण है यह मेरा असली स्वरूप नहीं है। बार-बार दुःखी होना, नाराज होना, उदास होना और जीवन के संघर्ष में थक जाना ऐसा यह मेरा स्वरूप नहीं है। मेरा स्वरूप शक्ति का है। यह मेरा आत्मिक स्वरूप है और शक्तिशाली बनने की एक विधि है। स्वामी विवेकानंद ने कभी कहा था कि हर आत्मा में अनंत शक्तिशाली है कहीं से शक्ति लाने नहीं है इसे अपने ही अंदर उखाड़ना है।

आत्मबल सबसे बड़ा बल होता है

शिक्षा अर्थात केवल साक्षरता नहीं संपूर्ण ज्ञान है। मन की शक्तियों से माइंड पावर से शक्तियां बढ़ जाएगा। अभी हम जितने शक्तिशाली हैं उससे कई गुना और शक्तिशाली हो जाए। शक्तिशाली अर्थात केवल बाहुबल नहीं। महाभारत में तीन बलों का वर्णन है:-1.बाहुबल, 2.बुद्धिबल और 3.आत्मबल। बाहुबल अर्थात शरीर का बल हो सकता है। कोई शरीर से कितना भी बलवान हो शक्तिशाली हो लेकिन उसे हम सबसे बड़ा बल नहीं कहेंगें। एक बार इंटरनेशनल का बॉक्सर अस्पताल में भर्ती था शरीर से बहुत शक्तिशाली था जैसे ही उसे सुई देने गए एकदम रोने लगा क्योंकि वह सुई से डरता था आंसू आ गए उसको बाकी शक्ति बहुत ही था। एक होत है शरीर का बल जो की फिजिकल ट्रेनिंग से प्राप्त हो सकता है दूसरा है बुद्धि का जो कि माइंड की ट्रेनिंग से प्राप्त होता है परंतु सबसे बड़ा बल है आत्मबल महात्मा गांधी के पास कोई बहुत अधिक शक्ति नहीं था ना ही आइंस्टीन जैसी बुद्धि थी तो क्या था तो वह था आत्मबल शक्ति जिसे हम मेडिटेशन से प्राप्त कर सकते हैं।

क्रमशः..

प्रेरक विचार Spiritual THOUGHTS

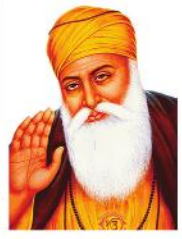

गुरुनानक देव, धर्मपिता, सिक्ख धर्म

कर्म भूमि पर फल के लिए श्रम सबको करना पड़ता है, रब सिर्फ लकीरें देता है रंग हमको भरना पड़ता है

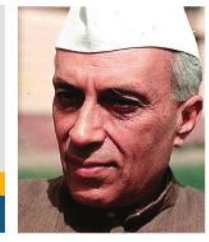

जवाहरलाल नेहरू, प्रथम प्रधानमंत्री, भारत

वफादार और कुशल महान कारण के लिए कार्य करते हैं, भले ही उन्हें तुरंत पहचान न भी मिले, अंततः उसका फल मिलता ही है

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ
अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

जीवन प्रबंधन

सबकुछ बदल जाता जब हम, अपनी सोच बदल लेते हैं

अगर हम सभी को आत्मा समझकर बात करेंगे तो बैरियर सारे निकल जाएंगे, ईगो निकल जाएगा और जैसे ही ईगो निकलता जाएगा तो लालच, ईर्ष्या, द्वेष सब निकल जाएगा और सोल कॉन्ससनैस आ जाएगी।

पवित्रता के साथ आत्मिक स्थिति में रहने में सभी तरह की सुख समाहित हैं उससे उपजा हुआ सुख और शांति आनंददायक होता है।

शिव आमंत्रण आबू रोड। राजयोग के अंदर हम सबसे पहले यही सीखते हैं। केवल सुनना नहीं लेकिन आज सारा दिन जब हम लोगों से मिलेंगे, उनसे बात करते करेंगे, यहां तक कि खुद से भी बात करेंगे, तो कौन हूं मैं? प्योर एनर्जी पीसफुल सोल हूं जिसको हिंदी में आत्मा कहते हैं। आप सभी ने यह आत्मा शब्द कहीं ना कहीं पहले जरूर सुना होगा किसी प्रवचन में, पूजा पाठ करते हुए या किसी भूत की मूवी में यह सुना होगा लेकिन आज हम जब लोगों से मिलते हैं या जब खुद से बात करते हैं तो कितना याद रहता कि मैं आत्मा हूं? याद रहता है? नहीं इसका मतलब धर्म अलग प्रैक्टिकल लाइफ अलग। वहां गए मैं एक आत्मा हूं और यहां आए तो मैं एक चेयरमैन हूं। नहीं यहां पर आए तो भी कौन हूं मैं? मैं एक शांत स्वरुप आत्मा हूं जो कि चेयरमैन का रोल अदा कर रही हूं। क्या इससे कुछ अंतर होगा? हां होगा, जब आप अपने ऑफिस में जाते हैं इस सोच के साथ कि मैं चेयरमैन हूं तो ऑटोमेटिकली दूसरों को क्या वाइब्रेशन मिलने वाला है? कि ये ऊंचे हैं और हम इनसे नीचे हैं चाहे हम उनसे बहुत प्यार से बात करते हैं बहुत अच्छा व्यवहार करते हैं तो भी उनके मन में क्या जाएगा कि यह हम से ऊपर हैं। आप सारा दिन देखो हम या तो किसी से ऊंचे हैं या तो किसी से नीचे हैं। दोनों ही सच नहीं है, ठीक नहीं है क्योंकि हम सब बराबर हैं मैं पति हूं गुस्सा कर सकता हूं लेकिन जब मैं एक शांत स्वरुप आत्मा हूं पति का रोल अदा कर रहा हूं दोनों में कोई फर्क आएगा? यह सामने वाली भी शुद्ध आत्मा है जो कि मेरी पत्नी का रोल अदा कर रही है यह बच्चे भी आत्मा है। कोई फर्क पड़ेगा? हां सब कुछ बदल जाएगा जब हम अपनी सोच में बदलाव लाते हैं कि मैं कौन हूं? इसलिए हमारे विद्वानों ने भी कहा है कि जब इस पहेली का उत्तर मिल जाएगा कि मैं कौन हूं तो सब कुछ बदल जाएगा, अच्छा हो जाएगा लेकिन मैं कौन हूं यह सिर्फ स्टडी करने कि टाइम ही नहीं याद रखना बल्कि सारा दिन याद रखना है क्योंकि मैं एक्टर हूं और यह रोल अदा कर रहा हूं।

प्रत्येक आत्मा एक्टर है जिसका अपना रोल है

अमिताभ बच्चन एक एक्टर हैं कितने रोल उन्होंने अदा किए हैं, हर बार जब वह एक रोल अदा करते हैं तो हम क्या कहते हैं कि हां यही वो एक्टर हैं जो यह रोल अदा कर सकते थे अगर वही रोल कोई दूसरा अदा करे तो सेम होता? नहीं, क्योंकि हर एक एक्टर की अपनी पर्सनैलिटी है लेकिन अगर अमिताभ बच्चन ही भूल जाए कि वह एक एक्टर है तो उसका रोल कैसा हो जाएगा साधारण क्योंकि उनको याद ही नहीं कि वह अमिताभ बच्चन हैं। हम सब एक्टर हैं और एमडी वॉचमैन चेयरमैन का रोल अदा कर रहे हैं लेकिन रोल अदा करते हुए भूल गए हैं कि मैं शुद्ध आत्मा हूं जो यह रोल निभा रही हूं। जिस समय हमें यह याद आता है कि मैं शुद्ध पवित्र शक्तिशाली आत्मा हूं तो हमारा हर रोल कैसा हो जाएगा? मेरी पर्सनैलिटी प्योरिटी और पीस की हर रोल में आ जाएगी क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कौन हूं! यही अभ्यास समय समय पर सारा दिन करना है।

कोई भी आदत संस्कार का रूप ले लेती है

मन में दो तरीके तरह के विचार आते हैं यह करूं या ऐसे करूं। मान लीजिए कोई आपको पहली बार सिगरेट ऑफर करता है तो मन में विचार चलेंगे सिगरेट ले लूं या नहीं लूं। तो मैं आत्मा दोनों विचारों की तुलना करता हूं और फैसला करता हूं। यह फैसला करने वाली है बुद्धि, जिसको विवेक भी कहा जाता है। मान लीजिए बुद्धि ने कहा कोई बात नहीं एक बार पी लो और हम वह पी लेते हैं। आगे 6 महीने के बाद फिर किसी ने ऑफर किया एक बार ले लो कुछ नहीं होगा दोबारा फिर सोचेंगे लूं या नहीं लूं बुद्धि ने कहा कुछ नहीं होता लास्ट टाइम भी तो लिया था कुछ हुआ ले लो तो द्वारा वो फिर कर्म में आ जाता है। ऐसे करते आठ दस बार जब हम उसको कर्म में लाते हैं यह हमारी आदत बन जाती है जिसको हम कहते हैं संस्कार। तो क्या ये संस्कार फिजिकल रूप में है? मन फिजिकल रूप में है? बुद्धि फिजिकल रूप में है? तीनों क्या है यही वह एनर्जी है आत्मा।

एक वातावरण में जन्मे, पले बच्चे भी अलग-अलग संस्कार के होते हैं

हम कहेंगे बहुत पुण्य संस्कारों वाली आत्मा है यह नहीं कहेंगे कि बहुत पुण्य संस्कार वाला शरीर है। हर एक आत्मा में 5 तरह के संस्कार होते हैं यह जानना बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि तभी हम खुद को और दूसरों को जान सकेंगे। पहली तरह के संस्कार हम अपने माता पिता से लेते हैं यानी कि हमारी फैमिली से हमें मिलते हैं। इसीलिए कहते हैं कि इनके माता-पिता ऐसे हैं यह भी ऐसे हैं। कुछ संस्कार हम अपने एनवायरमेंट से लेते हैं जैसे कि अगर आप बेंगलुरु में रहते हैं आप में अलग तरह के संस्कार होंगे जब आप दिल्ली जाएंगे आपको दूसरे तरह के संस्कार देखने को मिलेगे जब आप मुंबई होंगे तो आपको दूसरे संस्कार देखने को मिलेंगे। किस कारण से एनवायरमेंट, कल्चर और कास्ट के अलग होने के कारण तीसरी तरीके के संस्कार हैं जो मैं आत्मा अपने पिछले जन्म से लेकर आई हूं। याद रखिए एक महत्वपूर्ण बात के जब आत्मा एक शरीर में है जो भी हम कर्म करते हैं वह इस आत्मा में रिकॉर्ड होते जाते हैं। जब आत्मा यह शरीर छोड़ती है और अगले शरीर में जाती है तो वह संस्कार भी साथ में चले जाते हैं। इसलिए जब आपके घर में दो बच्चे हैं एक ही माता पिता ने जन्म दिया है, एक ही तरह का एनवायरमेंट है, एक ही तरह की पालना है, फिर भी दोनों की नेचर अलग अलग होगी।

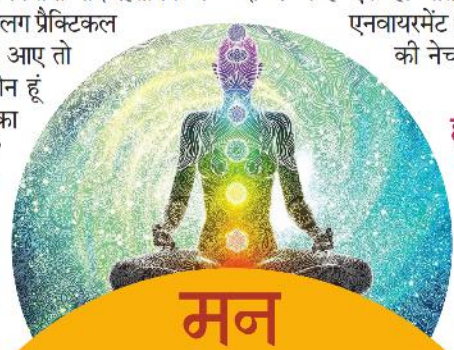

मन
एक ऊर्जा है जिसे देखी नहीं जा सकती है

अब हम जानेंगे कि आत्मा सारा दिन क्या करती है? हमारे ब्रेन के बिल्कुल बीचो-बीच में आत्मा की सीट है, जब हम मेडिटेशन करते हैं तो आत्मा को मस्तिष्क के बीच में देखते हैं क्योंकि ब्रेन के बीच में हम नहीं देख सकते। अब यह आत्मा सारा दिन क्या करती है? कैसे हम जान सकते हैं कि आत्मा है या नहीं? जब हम कुछ सोचते हैं, कुछ भावनाएं आती है, इच्छा करते हैं, यह सोचना इच्छा करना भावनाएं उत्पन्न करना यह है मन। क्या हम सबके पास मन है? किसी ने कभी देखा है उसको? किसी डॉक्टर के पास जाएंगे तो डॉक्टर ब्रेन दिखा सकता है अगर आप डॉक्टर को पूछेंगे कि इस शरीर में मन कहां है तो क्या आपको वह यह दिखाएगा? नहीं। क्योंकि ब्रेन बॉडी का एक पार्ट है, भौतिक रुप में है जो दिख सकता है। मन एक ऊर्जा है जो कि देखी नहीं जा सकती, फील की जा सकती है। एक बच्चे को भी पता है कि मन है।

हरेक आत्मा का अपना रिकार्डिंग अलग-अलग है

कई बार तो जुड़वा बच्चे भी सब कुछ एक तरह का है शक्ल लेकिन पर्सनैलिटी अलग-अलग है और मात-पिता बोलते हैं कि इन दोनों को सब कुछ एक जैसा दिया है फिर दोनों अलग अलग क्यों हैं क्योंकि कुछ साल पहले दोनों अलग-अलग जगह पर थे अलग-अलग कर्म कर रहे थे उनके अलग-अलग संस्कार थे दोनों को एक जैसा समझने की गलती मत कीजिए हो सकता है एक बहुत शर्मीला हो संस्कारी हो, कम बोलता हो और दूसरा बहुत ऊंचा बोलता हो, बहुत हंसी मजाक करने वाला हो, शर्माता ना हो। हम हरेक समय क्या करते रहेंगे तुम उसके जैसा बनो, तुम उसके जैसा बनो तुम्हारा भाई देखो कैसा है? तुम्हारी बहन देखो कैसी है? हम क्या कर रहे हैं यह। दोनों की अलग-अलग रिकॉर्डिंग है, अगर हम दोनों को मिक्स करने की कोशिश करेंगे तो हम आत्मा की पर्सनैलिटी को डैमेज कर देंगे।

डॉ. अजय शुक्ला | बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर (स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

जीवन का मनोविज्ञान- 17

विकासात्मक परिदृश्य और कल्याणकारी परिवेश का स्वतंत्र अस्तित्व

कल्याणकारी परिवेश से आत्म उत्थान की गतिशीलता

जीवन के विकास पथ पर चलते हुए जब व्यक्ति अंतर्मन से कल्याण के लिए सोचता है तब उसे पुरुषार्थ करते-करते स्वयं का साक्षात्कार होता है। आत्म उत्थान की गतिशीलता मानव को सदैव इस सत्य का आभास कराती है कि विकासात्मक परिदृश्य और कल्याणकारी परिवेश की स्वतंत्रता प्रायः अपने अस्तित्व को बनाए रखती है। स्वयं को विकसित करने के जितने भी सन्दर्भ एवं प्रसंग का उल्लेख किया जाता है उसमें निजी जीवन के उत्सर्ग की सूक्ष्म स्थितियां विद्यमान होती हैं। व्यक्ति के विकास का आभामंडल सम्पूर्णता की व्यापकता के परिदृश्य में विचरण करते हुए कल्याणकारी परिवेश से गुजरता रहता है। आत्मिक बोध में उत्थान की अवस्था का व्यावहारिक स्वरुप इतना सहज होता है कि वह कल्याणकारी परिवेश में आत्मा की सात्विकता को उच्चता के मानदंड पर स्थापित करने में सफल हो जाता है ।

आत्मिक साधना में पवित्र साधन की उपयोगिता

मानव द्वारा जब स्वयं को विकास की प्रक्रिया में संलग्न किया जाता है तब संकल्प की पवित्रता से आरम्भ करते हुए कल्याण के मार्ग पर अंत तक विकल्प की पवित्रता को अक्षुण्य बनाए रखने का पुरुषार्थ किया जाता है। जीवन में साधन और साध्य की पवित्रता को आत्मिक साधना हेतु महत्वपूर्ण रूप से स्वीकार किया जाता है क्योंकि आत्म तत्व का परिष्कार विकास का मूलभूत केंद्र बिंदु होता है। आत्मिक साधना में पवित्र साधन की उपयोगिता वर्तमान युग के भीतर जग जाहिर हो चुकी है जिसमें 'आत्मा की पवित्रता' को जीवन की गतिशीलता में-भाव, भाषना, भावनाएवं भाषा की पवित्रता से संरक्षित किया जा सकता है। व्यक्तिगत स्तर पर आत्मिक साधना के प्रति निष्ठावान होने का मुख्य कारण स्वयं एवं सर्व को (निश्छल प्रेम) शर्त मुक्त, प्रदत्त प्रेम है जो मनुष्य को त्याग, तपस्या एवं सेवा की उच्चता से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में जोड़ते हैं। आत्मा की उच्चता उस समय अनुभूतिगत पुरुषार्थ में प्रस्फुटित होती है जब स्वयं-मैं, का पर्याय आत्मा तथा स्वयं से सम्बंधित-मेरा के विस्तार में केवल परमात्मा ही रहते हैं।

सत्य, प्रेम, अहिंसा की निस्वार्थता का धर्म

व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया में जिन शाश्वत मूल्यों का प्रयोग अत्यंत गौरवपूर्ण भाव से किया जाता है उनमें- सत्य, प्रेम, अहिंसा का विशिष्ट स्थान होता है। स्वधर्म को अपनाने के प्रति गहन आस्था सदा जीवन की उच्चता को व्यक्त करती है जिसमें स्वयं के निर्माण हेतु अनेकानेक सुअवसर विकासात्मक परिदृश्य में मौजूद रहते हैं। जीवन में निःस्वार्थता का धर्म हमें इतना शक्तिशाली बना देता है कि -'आत्मा बेहद की वैराग्य वृत्ति' को स्वतः ही धारण करके पुण्य कर्म की ओर सहज रूप से अग्रसर हो जाती है। आत्मा की पवित्रता के प्रति नैसर्गिक आकर्षण का स्वरूप व्यक्तिगत जीवन में कल्याणकारी परिवेश को निर्मित करते हैं जिसमें सत्य, प्रेम एवं अहिंसा की ताकत आत्मिक आनंद का कारक बनती है। सम्पूर्ण जीवन की व्यापकता में प्रायः सभी मनुष्य व्यक्ति से लेकर व्यवस्था तक विकास एवं कल्याण से सम्बद्ध होते हैं जिनकी सफलता और उपलब्धि के परिदृश्य में आत्मा का धर्म स्वमेव कार्यरत रहता है।

स्वतंत्र, उच्च, शुद्ध अस्तित्व द्वारा आत्म विकास

आत्मिक अस्तित्व का बोध व्यक्ति को हर पल यह बताता है कि उसे अपने जीवन में कैसे प्रत्येक क्षण का सदुपयोग आत्मा को विकसित करने में लगाना है । स्वयं की भौतिक अवस्था को एक मंदिर के स्वरुप में स्वीकारना और साधन की पवित्रता को बनाए रखने का जतन करना आत्म तत्व के देवत्व का वास्तविक सम्मान है। मानवीय चेतना की चिन्तनशील प्रवृतियां आत्म विकास के विभिन्न व्यावहारिक उदाहरण को कल्याणकारी स्वरुप में उनकी प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत किया करती हैं ।आत्म विकास के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक अनुसंधान अपनी संस्तुतिओं में यह दावा करते हैं कि आत्मिक उत्थान हेतु विकासात्मक परिदृश्य की स्वतंत्रता के साथ उच्च स्तरीय कल्याणकारी परिवेश की पवित्रता अक्षुण्य रहनी चाहिए । आध्यात्मिक पुरुषार्थ में स्वयं को आत्मिक गुणों एवं शक्तियों से सुसज्जित कर लेना मानव को प्राप्त स्वतंत्रता का श्रेष्ठतम परिणाम होता है।

पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर 20 लाख वृक्षारोपण का कीर्तिमान

वर्तमान समय पर्यावरण समस्या एक विकराल समस्या बन गया है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए पहल करते हुए पूरे देश में लाखों पौधे लगाने का संकल्प लिया है। इसी कड़ी में दैनिक भास्कर समाचार पत्र और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एक पेड़ एक जिन्दगी तथा मेरा भारत हरित भारत अभियान चलाया जिसमें नौ प्रदेशों समेत पूरे देशभर में वृक्षारोपण किय

इसकी शुरूआत ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की पुण्य तिथि 25 अगस्त को किया था जो एक माह तक चला जिसमें करीब बीस लाख पौधे रोपे गये। इसके लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की जिला से लेकर तहसील स्तर पर फैले अपने सेवाकेन्द्रों के माध्यम से लाखों लोगों को प्रेरित भी किया।

हरदूआगंज सेवाकेंद्र इंचार्ज बीके कमलेश सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति ने वृक्षा रोपण कर संभाल करने का संकल्प लिया।

बिलासपुर वृक्षारोपण कर दिया ईश्वरीय संदेश जहां कई बीके भाई-बहनें मौजुद रहीं।

जयपुर सेवाकेंद्र इंचार्ज बीके ज्योति के साथ आयुर्वेदिक अस्पताल के स्टाफ ने भी वृक्षारोपण किया।

परबतसर राजस्थान के परबतसर में बीके सानू के साथ वृक्षारोपण करते अन्य भाई बहनें।

इन्द्रपुरी बीके बाला और बीके गायत्री के साथ कई लोगों ने मिलकर वृक्षारोपण किया।

इस वर्ष ब्रह्माकुमारीज़ ने पर्यावरण संरक्षण के लिए 20 लाख वृक्ष लगाने का संकल्प लिया है जिसके अंतर्गत 9 प्रदेशों में पौधे लगाये गये।

अलिराजपुर एमपी के अलीराज पुर में वृक्षारोपण कर खुशियां मनाते हुए बीके माधुरी, बीके सेना, बीके ममता और अन्य।

भिलाई एमपी के भिलाई मेरा भारत हरित भारत और एक पेड़ एक जिंदगी अभियान के तहत बीके आशा तथा अन्य।

नरसिंहपुर बीके कुसुम के साथ अन्य भाई-बहनें वृक्षारोपण कर ईश्वरीय संदेश दिया।

हाथरस उत्तर प्रदेश हाथरस में बीके उमा, बीके गजेन्द्र ने वृक्षारोपण कर दिया संदेश।

असन्ध बीके उषा, बीके नीलम, बीके सरिता के साथ अन्य भाई-बहनों ने वृक्षारोपण कर दिया संदेश।

अलवर राधाकृष्णा पार्क में वृक्षारोपण करते हुए बीके बहनों के साथ अभियंता अशोक मदान और अन्य।

शाजापुर पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण करते हुए सेवाकेन्द्र के भाई बहनों ने सुरक्षा का संकल्प लिया।

छतरपुर बीके रीना तथा अन्य बीके बहनों ने 1100 से अधिक पौधे लगाकर संरक्षण का संकल्प लिया।

अजमेर धोलाभाटा सेवाकेंद्र की ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ अन्य ने भी वृक्षारोपण किया।

ग्वालियर मध्य प्रदेश के ग्वालियर में वृक्षारोपण करते हुए बीके भाई-बहनें।

भिलाईनगर मुख्य अतिथि विजय बघेल के उपस्थिति में बीके भाई-बहनों ने वृक्षारोपण किया।

राजवाड़ा इंदौर बीके भाई-बहनों ने करीब 500 पेड़ लगाकर दिया समाज को स्वच्छ बनाने का संदेश।

कच्छ गुजरात के कच्छ में पांच हजार पौधे लगाये गये जिसमें स्थानीय सेवाकेन्द्र के साथ बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

अम्बिकापुर एक पेड़ एक जिंदगी अभियान कार्यक्रम में बीके भाई बहनों ने किया वृक्षारोपण।

उदयपुर राजस्थान के उदयपुर में वृक्षारोपण करते हुए बीके मोहन, बीके जीतू, रवि तथा बीके रीटा एवं अन्य।

भरतपुर वृक्षारोपण कर मेरा भारत हरित भारत का कार्यक्रम बीके भाई-बहनों ने किया।

थाना इंद्रपुरी बीके भाई-बहनों के साथ वृक्षारोपण करते हुए थाना के पुलिस अधिकारी और अन्य।

फतेहाबाद हरियाणा के फतेहाबाद में एक पेड़ एक जिंदगी कार्यक्रम में वृक्षारोपण करते हुए भाई-बहनें।

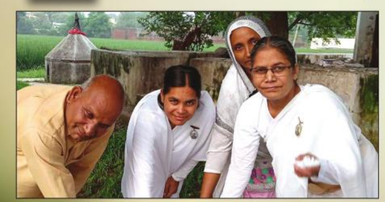

कौल बीके पुष्प, बीके उर्मिल और अन्य ने वृक्षारोपण किया।

आगरा विधायक हेमलता के साथ बीके विमला ने वृक्षारोपण कर दिया पर्यावरण सुरक्षा का संदेश।

तलेगांव महाराष्ट्र के तलेगाँव में वृक्षारोपण करते हुए बीके प्रभा बीके मीना एवं अन्य।

उज्जैन अहिल्या बाई वेद विद्यालय के संत छात्रों के साथ वृक्षारोपण करते बीके भाई बहनें।

भोपाल बीके रीना के साथ अन्य भाई बहन वृक्षारोपण करते हुए दिया ईश्वरीय संदेश।

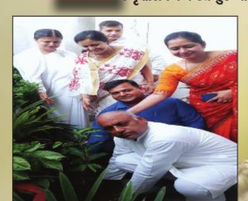

मऊ, यूपी पौधारोपण करती बीके विमला तथा अन्य

राजगढ़ सेंटर इंचार्ज बीके मधु के साथ अन्य भाई -बहनें वृक्षारोपण करते हुए।

तुंडला बीके विजय बीके अलका सहित कई अन्य भाई बहनों ने वृक्षारोपण किया।

होडल बीके उषा, बीके पूनम सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने वृक्षारोपण किया।

रियल लाइफ

अपकार करने वालों पर भी उपकार सेवा कार्य किया

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

संस्थापक
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

रियल लाइफ कॉलम में हम आपको प्रत्येक अंक में बताएंगे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मार्ग में क्या बाधाएं आईं और उनका सामना ब्रह्मा बाबा ने कितनी सरलता से किया.... जीवन को पलटने वाली अद्भुत जीवन कहानी पुस्तक से क्रमश...

“

पिछले अंक में आपने जाना कि दिव्य गुणों की धारणा पर ध्यान देकर यज्ञ माता और यज्ञ पिता द्वारा अलौकिक शिक्षा और पालना देते हुए राजसूय अश्वमेघ अविनाशी ज्ञान यज्ञ की शुरुआत हुई

यज्ञ माता ओम राधे इस शिव शक्ति दल की कुशल सेनानी थीं जो कि शक्तियों को ज्ञान रूपी अस्त्रों-शस्त्रों से और दिव्य गुणों से सजाती रहती थीं। जैसे 'ओम राधे' जी को सभी वत्स मम्मा, मां 'मातेश्वरी या यज्ञ-माता' कहकर बुलाते थे, वैसे ही 'ओम् बाबा' को वे सभी 'बाबा, पिताश्री अथवा यज्ञ-पिता' कहकर बुलाते थे। यहां तक कि उनकी लौकिक पत्नी और बहन भी उन्हें अब आत्मिक नाते से 'बाबा' ही कहती थीं और बाबा भी उन्हें 'बेटी अथवा बच्ची' कह कर बुलाते थे। यज्ञ-माता भी उन्हें सदा 'बाबा अथवा पिताश्री' के मधुर नाम से संबोधित करती थीं।

ब्रह्मा, जगदम्बा सरस्वती नाम की सार्थकता

उन्हीं दिनों परमपिता परमात्मा शिव ने बाबा के तन का आधार लेकर यह भी परिचय दिया कि दादा अथवा बाबा ही वास्तव में प्रजापिता ब्रह्मा है क्योंकि उनके मुख द्वारा वे (परमपिता शिव) शूद्रों अर्थात विकारी नर नारीयों को मरजीवा जन्म देकर सच्चे ब्राह्मण (पावन अथवा द्विज) बना रहे हैं और सतयुगी पावन सृष्टि की स्थापना कर रहे हैं। उन्होंने यह भी समझाया कि ओम् राधे अथवा मम्मा ही यज्ञ माता सरस्वती है जिनका कि ब्रह्मा की सर्वोत्तम ज्ञान निष्ठ पुत्री के रूप में गायन है। इस ईश्वरीय यज्ञ को 5000 वर्ष पहले वाला राजसूय अश्वमेध अविनाशी ज्ञान-यज्ञ भी कहा जाता रहा क्योंकि यहां मन रूपी अश्व को ज्ञानाग्नि में स्वाहा करके सतयुगी विश्व का स्वराज्य प्राप्त करने के लिए ही ज्ञान की धारणा अपने जीवन में की जाती है। 5000 वर्ष पहले भी गीता युग में भगवान ने पांडवों से यह यज्ञ कराया था, अब फिर उन्होंने ही इसकी स्थापना की है। यही यज्ञ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। क्योंकि परमपिता परमात्मा शिव ने सहज ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा मनुष्य को देवता अथवा नर को श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी पद के योग्य बनाने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा इसकी स्थापना की थी। ज्योति स्वरूप परमापिता परमात्मा शिव ही प्रतिदिन परमधाम से ब्रह्मा-तन में आ-आकर उनके मुख का आधार लेकर मनुष्यात्माओं को पतित से पावन बनाने के लिए सहज गीता ज्ञान देते और सहज राजयोग सिखाते रहे। परंतु उस अति प्रसिद्ध परमपिता के उस गुप्त, साधारण वेश (तन) में होने के कारण लोग भ्रान्तिवश पिताश्री अर्थात ब्रह्मा बाबा को ही इस यज्ञ का स्थापक तथा ब्रह्माकुमारी बहनों और ब्रह्माकुमार भाइयों का गुरू मानते रहे हैं और अज्ञानता वश उन पर गाली रूपी अक के फूल चढ़ाते रहे हैं परंतु परमपिता शिव, प्रजापिता ब्रह्मा और मातेश्वरी सरस्वती जी पतितों को पावन करने का कर्तव्य यथापूर्व अथक रीति से करते रहे।

आत्म-कल्याण और विश्व सेवा के लिए शिक्षा

इस प्रकार शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा और जगदम्बा सरस्वती सभी ज्ञान-वत्सों को ज्ञान श्रृंगार से खूब श्रृंगारते रहते थे। वे उन्हें योग- तपस्या का अधिकाधिक अभ्यास कराके विश्व की आध्यात्मिक सेवा के लिए तैयार कर रहे थे। वकीलों, डॉक्टरों, व्यापारियों, अध्यापकों, गृहस्थियों, साधुओं आदि हरेक को यह सर्वोत्तम ईश्वरीय ज्ञान किस रीति समझा कर उनका कल्याण करना है, इसके लिए वे यज्ञ वत्सों को शिक्षा देते रहे हैं। दुनियां की निगाहों और आवाजों से दूर होकर सभी अपनी योग-ज्वाला में आत्म-शुद्धि कर रहे थे तथा स्वयं में शक्ति भी भर रहे थे।

उपकार सेवा कार्य के लिए नियम

पांच छः वर्षो के बाद एक दिन शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा के माध्यम द्वारा कुछेक ज्ञान-निष्ठ कन्याओं को कहा कि अब आपकी अवस्था परिपक्व हो गई है। अब आप लोगों को अपने लौकिक माता पिता और परिवार के यहां घर जाना है और जिनहोंने आप पर अपकार किया था, उनका भी उपकार करना है। उन्होंने उस समय आपको न पहचान कर आप पर अत्याचार किए थे परंतु अब आप उनके यहां जाकर उनका भी कल्याण करो। कहावत भी है कि पहले तो घर वालों का भला करना चाहिए। जिन यज्ञ-वत्सों अथवा ब्रह्माकुमारीयों को अपनी लौकिक माता के घर में ज्ञान देने के लिए भेजा गया था उनमें से एक ब्रह्माकुमारी मनोहर इंन्द्रा जी भी थीं। इस विषय में उनका अगले अंक में निम्नलिखित उल्लेख पढ़ने के योग्य है... क्रमशः

वंडर्स ऑफ BRAHMAKUMARIS

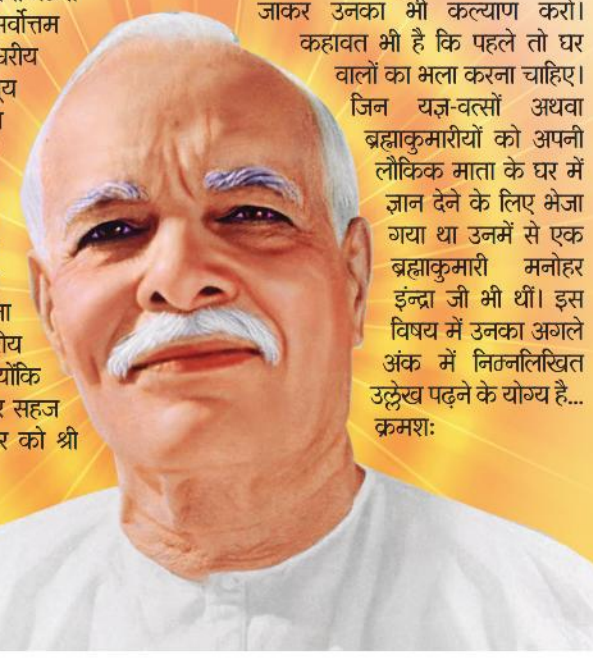

इस कॉलम में आपको हर बार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एवं भाई-बहनों को मिले पुरस्कार या सम्मान से रुबरु कराएंगे। इस बार आप जानेंगे बीके उषा को वेलनैस एंबेसेडर अवार्ड से सम्मान, भोपाल की बीके रीना को समाज सरोकार पुरस्कार तथा मानव अधिकारों की रक्षा व बढ़ावे के लिए बीके बिन्नी और बीके बीना का सम्मान.........

स्प्रिचुअल एंड वेलनैस एंबेसेडर अवार्ड से बीके ऊषा को कैलीफोर्निया में नवाजा

शिव आमंत्रण » **कैलीफोर्निया।** अमेरिका के कैलीफोर्निया के ऐनाहाइम कन्वेंशन सेन्टर में 8वे गॉड अवाईस सेरेमनी में विश्व के महान मानवता वादियों का सम्मान किया गया, जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ भी शामिल हुए। 10 से भी ज़्यादा देशों से आए मेहमानों के बीच फिलीपिन्स की राजकुमारी एवं वुई केयर फॉर ह्युमैनिटी संस्थान की फाउण्डर प्रिंसेस मारिया अमोर ने वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके ऊषा को ग्लोबल आर्डर ऑफ डिग्निटीज एवं फ्लैन्थ्रोफिस्ट अवार्ड केटेगरी के तहत स्प्रिचुअल एण्ड वेलनैस एंबेसेडर अवार्ड से नवाज़ा। इसमें प्रिंसेस मारिया अमोर ने कहा कि हमारा संघर्ष मानव की स्वतंत्रता के लिए है, उसकी सौ प्रतिशत शांति के लिए है, उसकी प्रजातंत्र के लिए है। वहीं बीके ऊषा ने कहा कि मानवता के लिए सेवा ही भगवान की सेवा कहलाई जाती है। इस दौरान उन्होंने प्रिंसेस मारिया के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय आने का निमंत्रण दिया।

समाज सरोकार पुरस्कार से बीके रीना सम्मानित

शिव आमंत्रण » **भोपाल।** भोपाल में सामाजिक सेवाओं में अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए भोपाल के मंडीदीप में सेवा समिति मंडीदीप द्वारा गुलमोहर कॉलोनी सेवाकेन्द्र की प्रभारी बीके रीना को समाज सरोकार पुरस्कार 2019 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान भाजपा के उपाध्यक्ष एवं राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उन्हें प्रदान किया।

मानव अधिकारों की रक्षा व बढ़ावे के लिए बीके बिन्नी और बीके बीना का सम्मान

शिव आमंत्रण » **चेन्नई।** चेन्नई में ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ ह्यूमन राइट्स लिबर्टीज एंड सोशल जस्टिस के तहत 9 वी इंटरनेशनल पीस कांफ्रेंस और अवार्डस् का आयोजन हुआ। भारत में ग्लोबल पीस इनिशिएटिव की रीजनल डायरेक्टर बीके बिन्नी और तमिलनाडु में ब्रह्माकुमारीज की जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके बीना को शांति, सद्भाव, मानव अधिकारों की रक्षा एवम् उन्हें बढ़ावा देने के अतुलनीय कार्यों के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया।

अगले अंक में आप जानेंगे संस्था की अन्य उपलब्धियों के बारे में..पढ़ते रहिए शिव आमंत्रण।

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

राजयोग को अपनाकर अपना जीवन सफल बनाया

वीरेन्द्र कुमार
इंश्योरेंस एडवाइजर, बेगुसराय (बिहार)

मैं 25वर्षीय एक सफल व्यवसायी हूं। विगत 2011 से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़कर मेडिटेशन का अभ्यास कर रहा हूं। इससे पहले मैं बहुत ही डिप्रेशन चिंता का शिकार रहता था जिसके कारण अक्सर सिर में दर्द बना रहता था। मैं खुद को अच्छा न समझकर और कमजोर समझता था। मेरे अंदर आत्मविश्वास की कमी होने के वजह से कुछ भी नहीं कर पा रहा था। हमारे मन में कुछ अच्छा करने की चाहना तो बहुत होता था परंतु घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण कुछ सोचकर भी नहीं कर पाते थे। जब से यह ज्ञान मिला तब से एक नया जन्म हुआ है ऐसा महसूस करता हूं। आज मैं रोजाना मेडिटेशन अभ्यास कर अपनी आत्मिक बल को इतना सकारात्मक एवं खुशनुमा रूप से बढ़ा लिया हूं कि जिसका स्वप्न में भी सोचा नहीं था।

हमेशा खुद की कमियों को भरकर ही आगे बढ़ना और बढ़ाना है

यदुवंश पंजियार
पत्रकार, सीतामढ़ी की आवाज सीतामढ़ी (बिहार)

मैं सत्य ज्ञान की खोज में दर-दर भटक रहा था तभी मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आने का मौका मिला। जहां मुझे राजयोग के अभ्यास के बाद मुझे पता चला जिस सत्य और असत्य को हम इधर उधर औरों में ढूढ़ रहे हैं वो अच्छाई बुराई हमारे ही अंदर की संकल्पों का बीजारोपण किया हुआ परिणाम है। जिस बुराई को हम दूसरों में देख रहे हैं वो पहले खुद के अंदर ही झांक कर दूर करना है और जिस सत्य की खोज के साथ प्राप्ती चाहिए वो भी हमारे अंदर से शुरूआत होने वाली है। पहले हम अपना ही दृष्टिकोण बदलकर दुनियां को सकारात्मक तरीके से देख सकते हैं। हमें हमेशा खुद की कमियों को भरकर ही आगे बढ़ना और औरों को बढ़ना है। युवाओं को एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की ज

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के इंदौर जोन की जोनल निदेशिका बीके आरती दीदी से विशेष बातचीत, 17 साल की उम्र में समर्पित किया अपना जीवन

रुहानी बगिया की एक अनोखी माली...

संपन्न परिवार में जन्मी आरती बचपन में थीं फैशनेबल, पिता थे नेवी में कमांडर

शिव आमंत्रण ➤ इंदौर। बचपन से ही परमात्मा को जानने और पाने की आस थी। हमेशा संकल्प चलते थे कि अपने लिए तो सभी जीते हैं मुझे दूसरों के लिए जीना है। लोगों के लिए काम आ सकें, समाज के लिए कुछ कर सकें और दूसरों को सुख दे सकें ऐसा कुछ करना है। परमात्मा कौन हैं, कैसा है, कहां मिलेगा आदि बातों की खोज को लेकर मन में विचार चलते रहते थे। जब पहली बार दिल्ली के कमला नगर सेवा केन्द्र पर अपनी मां के साथ गई और वहां दीदियों के बताए अनुसार सात दिन का राजयोग मेडिटेशन कोर्स किया तो सारे सवालों के जवाब मिल गए। मेरे मन की प्यास पूरी हो गई।

यह कहना है ब्रह्माकुमारीज संस्थान के इंदौर जोन की जोनल निदेशिका राजयोगिनी बीके आरती दीदी का। पिछले 50 वर्षों से तन-मन और धन के साथ ब्रह्माकुमारीज से जुड़ी बीके आरती ने शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में अपने जीवन के कई अनुभव सांझा किए। राजसी ठाठ-बांट में पली-बढ़ी बीके आरती का जन्म दिल्ली के मिलिट्री हॉस्पिटल में 04 जुलाई 1952 को हुआ। आपके पिताजी प्रीतम दत्त नेवी कमांडर थे और माता रावी दत्त गृहिणी। आपके पिताजी मूल रूप से हरियाणा रोहतक के थे और आर्थिक रूप से काफी संपन्न थे। आपकी तीन बहनें व एक भाई है।

फैशनेबल था पहनावा...

बीके आरती दीदी ने चर्चा में बताया कि संपन्न परिवार में जन्म होने के कारण पहनावा और रहन-सहन फैशनेबल था। लेकिन इसके बाद भी हमें बचपन से अच्छे संस्कार दिए गए। पिताजी नेवी में होने के कारण घर में अनुशासन और शिष्टाचार का माहौल बचपन से ही मिला। शुरुआती शिक्षा आर्मी स्कूल में इंग्लिश मीडियम से हुई। दिल्ली, मुंबई, इंदौर शहर में रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त की है। बचपन से ही प्रखर-बुद्धिमान होने के साथ आरती खेल-कूद में सदा आगे रहती थीं। इसके अलावा स्कूल-कॉलेज में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आगे रहीं। उन्होंने बताया कि सदा सभी शिक्षकों की प्रिय विद्यार्थी रही।

राजयोगिनी बीके आरती दीदी

दादी से मुलाकात के बाद बदला जीवन...

चर्चा में बीके आरती दीदी ने बताया कि जब हम लोग लाल किले के पास रहते थे तो बुआ के कहने पर एक दिन अपनी मां के साथ दिल्ली के कमलानगर सेवाकेंद्र गए। वहां सबसे पहले दादी हृदयमोहिनीजी और भ्राता जगदीश भाई से मुलाकात हुई। दादी के स्नेह और प्रेमपूर्ण व्यवहार और दिव्यतापूर्ण जीवन को देखकर काफी प्रभावित हुई। इसके बाद दादी के कहने पर सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स पूरा किया। कोर्स के दौरान में इस सृष्टि के अनेक रहस्य जानने को मिले। बचपन से जिन सवालों को मैं खोज रही थी उनके सभी जवाब इस दौरान मिल गए। पहले मैं साधु-संतों के जीवन के बारे में पढ़ती थी और उनके जैसा बनने के विचार चलते थे, लेकिन दादी से मिलने के बाद मुझे लगा कि अब ऐसा सफेद वस्त्रधारिणी बनना है।

मेडिटेशन से चित्त एकाग्र होने लगा..

दिल्ली में राजयोग मेडिटेशन का कोर्स पूरा करने और नियमित राजयोग का अभ्यास करने से धीरे-धीरे मेरा चित्त एकाग्र होने लगा। मुझे एकांत अच्छा लगने लगा। इससे मुझे फैशनेबल वस्त्र को शौक खत्म हो गया। अब तो परमात्मा की याद में मग्न रहने लगी। जब दादी ने माउंट आबू और बाबा के बारे में बताया तो दिन-रात बाबा से मिलने की इच्छा होती रहती। मेरा अनुभव है कि राजयोग मेडिटेशन हमारे विचारों को शक्तिशाली, सकारात्मक बना देता है। इससे मन की शक्ति बढ़ती है।

ब्रह्मा बाबा से मिलते ही खुद को भूल गई

दादी हृदयमोहिनी के सान्निध्य में परिवार के साथ ब्रह्मा बाबा से मिलने माउंट आबू पहुंचीं। ट्रेन का लंबा सफर होने के बाद भी बाबा से मिलने के इतनी तीव्र उत्कंठा थी कि थकान महसूस नहीं हो रही थी। जब माउंट आबू में पांडव भवन पहुंचे तो बाबा कुटिया में बच्चों को पत्र लिख रहे थे। दादीजी ने कहा आप लोग आराम कर लीजिए, सफर में थक गई होंगी। लेकिन मैंने कहा पहले बाबा से मिलेंगे। इस पर परिवार के साथ बाबा की कुटिया में पहुंचे। बाबा ने जैसे ही हमें देखा तो कहा आओ मेरी कल्प पहले वाली बच्ची आओ और बाबा ने गले से लगा लिया। फिर बाबा ने कहा आज बाबा ने मुरली में कमांडर को याद किया। वह हद का कमांडर छोटे से जहाज को पार कराता है। शिव बाबा तो सारी दुनिया के जहाज को पार ले जाता है। शिव बाबा बेहद का कमांडर है। बच्चों आज की मुरली पढ़ना। बाबा शाम को आपसे फिर से मिलेगा। शाम को फिर ज्ञान चर्चा के बाद पिताजी को पूरा निश्चय हो गया कि ये कार्य किसी मनुष्य का नहीं बल्कि स्वयं परमात्मा का है। इसके बाद पिताजी ने राजयोग मेडिटेशन का नियमित अभ्यास करना शुरू कर दिया।

ट्रेनिंग में पांच बहनों की मेरिट में

18 जनवरी 1969 को ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद ईश्वरीय सेवाओं के प्रसार के लिए एक माह की प्रथम टीचर ट्रेनिंग मई-जून 1969 में माउंट आबू में आयोजित की गई। दादी गुलजार ने उस ट्रेनिंग में चलने के लिए कहा। जैसे ही माउंट आबू पहुंची तो महसूस हुआ कि बापदादा शिव बाबा व ब्रह्मा बाबा ट्रेनिंग में सफलता का विजय तिलक लगाने आए हैं। ट्रेनिंग के बाद जब बाबा रिजल्ट आया तो पांच बहनों की मेरिट लिस्ट में मेरा नाम भी था। ट्रेनिंग खत्म होने के बाद कुछ बहनें वापस पढ़ाई पढ़ने अपने घर चली गईं और मुन्नी दीदी व मैं सेवार्थ वहीं रुक गए।

आने के बाद मुड़कर नहीं देखा...

उन्होंने बताया कि माउंट आबू में तत्कालीन मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणिजी और सह-प्रशासिका दीदी मनमोहिनीजी ने पूछा कि आरती आपकी क्या इच्छा है? तो मैंने कहा कि मुझे लौकिक घर नहीं जाना है। ईश्वरीय सेवा में अपना जीवन देना है। बाबा और आप जैसा कहें। इस पर दादी व दीदी ने इंदौर सेवा के लिए जून 1969 में इंदौर भेजा। मैं माउंट आबू से सीधे इंदौर आ गई। इस दौरान पिताजी घर ले जाने के लिए कई बार इंदौर आए। पिताजी ने कहा कि पहले डीएड-बीएड की पढ़ाई कर लो फिर समर्पित होने का निर्णय लेना। मैंने कहा कि यज्ञ में आ गई हूं। मुझे आगे की पढ़ाई नहीं करनी और न ही घर जाना है क्योंकि अब मुझे विश्व कल्याण के सेवा में लगना है। मैं इस त्याग-तपस्या के जीवन में चलकर संपूर्ण विश्व में ज्ञान को प्रत्यक्ष करने की सेवा करूंगी। पिताजी के कई प्रयास के बाद भी अचल-अडोल रहीं। मेरे निश्चय और लगन को देखकर पिताजी और परिवार भी निश्चित हो गयी। वह भी सहयोगी बने।

इंदौर में बढ़ता गया रुहानी कारवां...

इंदौर में वर्ष 1969 में रोपा गया ईश्वरीय सेवाओं का पौधा आज विशाल रूप ले चुका है। आज इंदौर जोन में धीरे-धीरे आध्यात्म की गूंज चारों ओर फैलती गई और बीके ओमप्रकाश भाईजी के साथ कई सम्मेलन, सभा, सेमीनार का आयोजन किया गया। साथ ही 550 मूर्तियों के विशाल आध्यात्मिक संग्रहालय की स्थापना की गई। बीके आरती दीदी के निर्देशन में इंदौर जोन में करीब 200 सेवाकेन्द्र व उपसेवाकेन्द्र व अनेक गीता पाठशालाओं का संचालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। 300 से अधिक समर्पित बहनें आपकी पालना में विश्व की सेवा में अग्रसर हैं। आपकी ममतामयी पालना और स्नेह का कमाल है कि ये कारवां दिनोंदिन आगे बढ़ता जा रहा है।

---

12 साल बाद राजी हुए पिताजी, फिर किया समर्पण

वर्ष 2003 से आध्यात्मिक मार्ग के पथ पर चल रही हूं। गुप्ता परिवार में 1985 में मेरा जन्म हुआ। परिवार का माहौल धार्मिक होने से बचपन से ही भक्ति का संस्कार रहा। कृष्ण मंदिर, शिव मंदिर और लक्ष्मी-नारायण मंदिर में प्रतिदिन आरती शाम 6 बजे से रात 11 बजे तक करती थी। एक दिन मेरी मौसी के घर ब्रह्माकुमारी दीदी आईं और आत्मा-परमात्मा का परिचय दिया। ये सुनकर मन गदगद हो गया कि अब भगवान से मुलाकात हो ही जाएगी। सात दिन का कोर्स करने के बाद नई-नई अनुभूतियां होती गईं। मैंने सेन्टर पर जाना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे पक्का निश्चय कर दिया कि बस मुझे भी विश्व कल्याण में इन दीदी के जैसा बनना है। समर्पित होकर सेवा करनी है। जब पिताजी को यह पता चला तो वो खुश नहीं हुए। सेन्टर पर जाने से मना कर दिया लेकिन मेरी मां और भाई-बहनों का सहयोग मिलता रहा। 12 साल तक ये चलत रहा, इधर शादी की तैयारी भी होने लगी। मैंने पिताजी को स्पष्ट कह दिया कि मुझे तो विश्व सेवा करनी है, मैं शादी नहीं करूंगी। बाद में बीके आदर्श दीदी के समझाने पर पिताजी भी राजी हो गए और माउंट आबू में 2015 में समर्पण कर दिया। बाबा की छत्रछाया में असंभव भी संभव हो गया। बाबा लाख-लाख शुक्रिया आपने मुझे भरपूर कर दिया।

➤ बीके ज्योति, इन्द्रगंज, ग्वालियर (बीकॉम, एमए, पीजी डिप्लोमा इन वैल्यु एजुकेशन, एमएससी)

सेवा में जो खुशी मिलती है उसे बयां नहीं कर सकती

वर्ष 2007 में ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आई। जब भी दीदियों को देखती थी तो मन में ख्याल आता था कि मुझे भी अपना जीवन ऐसा बनाना है। दूसरों के कल्याण के लिए कुछ करना है। धीरे-धीरे राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से परमात्मा के प्रति लगन बढ़ती गई और जीवन का सत्य सार स्पष्ट होता गया। आध्यात्मिक ज्ञान गहराई से समझ आने लगा। 12वीं तक पढ़ाई करने के बाद सेंटर पर रहने लगी। क्योंकि परमात्म लगन के आगे पढ़ाई करने की इच्छा ही नहीं रही। मुझे लगने लगा कि जीवन में जो तलाश थी, जिसे मैं खोज रही थी वह मिल गया। आज जब सेवाकेंद्र पर लोग अपनी समस्याएं लेकर आते हैं और उनकी मदद करने का जो सौभाग्य मिलता है उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। मन को एक संतोष और खुशी मिलती है कि ये जीवन दूसरों की मदद करने, लोगों को सद्मार्ग बताने और ईश्वरीय सेवा में सफल हो रहा है। राजयोग से मैंने अपने जीवन में सीखा कि जीवन में दुआएं लेना ही सबसे बड़ा खजाना है। राजयोग मेडिटेशन से जीवन में परोपकार और सर्व के प्रति कल्याण का भाव प्रबल होता गया। राजयोग का ही कमाल है जो पहले मंच पर दो शब्द बोलने में डर लगता था लेकिन अब लोगों को ईश्वरीय संदेश देने में सुकून मिलता है। ये सब प्रभु पिता का ही कमाल है।

➤ बीके संध्या, संचालिका उपसेवाकेंद्र केसली, सागर, मप्र

पिताजी के डर से छुप कर करती थी मेडिटेशन

मेरा जन्म 1981 में जिला सतना के अमर पाटन गांव के एक साधारण परिवार में हुआ। 6 साल की उम्र से ही परमात्मा को पाने के लिए व्रत-उपवास रखना शुरू कर दिए थे। मन में यही रहता था कि भगवान कौन है, कहां मिलेगा ? आज से लगभग 21 साल पहले गांव में ब्रह्माकुमारी बहनों ने प्रदर्शनी लगाई जैसे ही मैंने उस प्रदर्शनी को देखा तो मन भाव-विभोर हो गया और पिता परमात्मा के परमधाम में रहने का परिचय जानकर खुशी का ठिकाना ना रहा। ऐसे लगा जैसे अनेक जन्मों की प्यासी आत्मा को प्यास बुझाने वाला अमृत पिलाने वाला खुदा परमात्मा सम्मुख सामने है। घर आकर मां से कह दिया कि मैं ब्रह्माकुमारी बनकर अपना जीवन निस्वार्थ सेवा में लगाऊंगी। जब ईश्वरीय साधना के लिए ब्रह्ममुहूर्त में मेडिटेशन करती थी तो पिताजी बंधन डालते थे। वर्ष 2003 में पिता परमात्मा को अपना जीवनसाथी बना लिया और इस ईश्वरीय कार्य में समर्पण कर दिया। कुछ समय हाथरस और आष्ठा में सेवाएं कीं। मैंने अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में समर्पित किया तो गांव की अनेक कन्याएं आज मुझे देखकर प्रेरित हुईं और विश्व कल्याण के कार्य में समर्पण कर दिया। परमात्मा पिता का कही कमाल है जो शरीर दिव्यांग होने के बाद भी आज कई किलोमीटर पैदल सकती हूं। पैदल चलकर गांव-मोहल्लों में परमात्मा का संदेश देती हूं। परमात्मा का दिल से धन्यवाद जो मुझे खुद अपना बनाया।

➤ बीके लक्ष्मी, इन्द्रगंज, ग्वालियर

सादा जीवन और उच्च विचार सदा आकर्षित करते थे

जब मैं छोटी थी तभी माता-पिता ब्रह्माकुमारीज से जुड़ गए। इसलिए बचपन से ही दीदियों को देखा और सेंटर पर आती रही। बचपन से ही आत्मा-परमात्मा के बारे में जानने का सौभाग्य मिला, इसलिए मुझे इस ईश्वरीय मार्ग पर चलने में विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ी। जब भी दीदियों को देखती तो उनका सादा जीवन और उच्च विचार मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित करते। उनकी लोगों के लिए मदद करने का निःस्वार्थ भाव, श्वेत वस्त्र और सदा खुशनुमा जीवन अच्छा लगता था। बचपन से रहन-सहन सादगीपूर्ण और खान-पान सात्विक रहा। बीए की पढ़ाई पूरी करने के बाद 18 वर्ष की आयु में शेष जीवन विश्व कल्याण में लगाने का निर्णय लिया और परमात्मा के यज्ञ में समर्पण कर दिया। यह जानकर माता-पिता भी बेहद खुश हुए। मेरा अनुभव है कि जब हम ईश्वर की सेवा में अपना जीवन अर्पण कर देते हैं तो फिर वह हमारी संभाल करता है। हमारी विशेषताएं बढ़ जाती हैं। मनोबल और आत्मबल बढ़ जाता है। परमात्मा से माता-पिता, भाई-बहन, सखा और साथी सभी रिश्तों का अनुभव होता है। राजयोग मेडिटेशन से हमारी आंतरिक शक्ति बढ़ती है। खुद को भाग्यशाली मानती हूं कि बचपन से ही परमात्मा पिता का सत्य परिचय मिला। ईश्वरीय साधना में खुद के साथ दूसरों की मदद करके आत्मिक सुकून और शांति की अनुभूति होती है। परमात्मा को पाने के बाद अब कुछ शेष पाना बाकी नहीं रहा। धन्यवाद तेरा, प्रभु धन्यवाद तेरा...

➤ बीके मोहिनी, सागर, मप्र

आर्ट ऑफ पॉजीटिव थिंकिंग और हाउ टू क्विट

धधकती दुनिया को अपनी लेखनी से बचाए मीडियाकर्मी

शिव आमंत्रण ➤ आबूरोड। भारत तथा नेपाल से आये सैकड़ों मीडियाकर्मियों के बीच मीडिया महासम्मेलन का शुभारम्भ किया गया। ब्रह्माकुमारीज संस्था के शांतिवन में विश्व शांति दिवस पर आयोजित मीडिया सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए संस्था के महासचिव बीके निर्वेर ने आह्वान किया कि अशांति के दावानल में धधक रही दुनिया में अपनी लेखनी से शांति और सद्भाव फैलाने का प्रयास करें। परमात्मा ने जो स्वर्ग रूपी दुनिया रची उसमें कुछ महाशक्तियां मिसायलों के ढेर लगाने में जुटी हुई हैं। जरूरत इस बात की है कि निरस्त्रीकरण के सिद्धांत को आत्मसात किया जाये। सच्चे स्वःधर्म को पहचानें और विकारों को त्यागते हुए अपने परिवारों को दुःखों से मुक्त करें। इंडियन फैडरेशन आफ वर्किंग जर्नलिस्ट

कार्यक्रम का दीप जलाकर उदघाटन करते अतिथि एवं अन्य।

के प्रधान के. विक्रम राव, मथुरा से आये विधायक पूर्ण प्रकाश, मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करूणा, वरिष्ठ पत्रकार प्रो. कमल दीक्षित, महाराष्ट्र वन चैनल के कार्यकारी संपादक संदीप चौहान, उपाध्यक्ष बीके आत्मप्रकाश ने भी विचार रखे। मीडिया विंग के मुख्यालय संयोजक बीके शांतनु ने सफल संयोजन किया।

हमारे हर संकल्प, बोल और कर्म में निःस्वार्थ सेवाभाव हो

शिव आमंत्रण ➤ भिलाईनगर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एवं राजयोग एजुकेशन एण्ड रीसर्च फाउण्डेशन के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ के गाँवों में 8 से 22 सितम्बर तक चलने वाले किसान सशक्तिकरण एवं नशामुक्ति अभियान भिलाई रथ का समापन समारोह सेक्टर-7 के

पीस ऑडिटोरियम में किया गया। जिसके अंतर्गत अभियान में शामिल सदस्यों का सम्मान किया। अभियान यात्रियों ने अपने अनुभवों को सुनाते हुए नशामुक्ती पर सुंदर प्रेरणादायी नाटक धर्मराज का दरबार प्रस्तुत किया। भिलाई सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्रह्माकुमारी आशा ने कहा, कि जो स्वयं पर राज्य करते है उन्हें कभी प्रकृति परेशान नही कर सकती है। पर वर्तमान में सभी स्वयं को छोडकर दूसरों पर राज्य करना चाहते है इसलिए तनाव बढने के साथ प्रकृति के पाँचों तत्व हलचल मचा रहे है।

म्हारो राजस्थान अभियान का भारतपूर में भव्य स्वागत

सुजानगढ़ में अभियान यात्रियों का ऐसा हुआ स्वागत।

शिव आमंत्रण ➤ भरतपुर। म्हारो राजस्थान समृद्ध राजस्थान अभियान के भरतपुर, भिलवाड़ा, सुजानगढ़ एवं श्रीगंगानगर समेत अन्य कई शहरों में अनेकानेक कार्य मों का आयोजन किया गया।

भरतपुर में अभियान के पहुंचने पर सदस्यों का भव्य स्वागत हुआ एवं गोविंद रिसोर्ट कृष्णा नगर में इस उपलक्ष्य में कार्य म भी रखा गया, जहां बतौर मुख्य अतिथि के तौर पर कैबिनेट मंत्री महाराजा विश्वेन्द्र सिंह ने कहा, कि हमारा मन दूषित होने से हमारा पर्यावरण एवं वातावरण दूषित हो जाता है। इसे हमें साफ करना होगा। इस मौके पर अन्य विशिष्ट अतिथियों में डी.आर.एम.आर सरसो अनुसंधान सेवर के निदेशक डॉ. पी.के. राय, कृषि महाविद्यालय कुम्हेर के डीन उदयभान सिंह, कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही आगरा सबज़ोन प्रभारी बीके कविता, अभियान यात्री बीके सुनेहा, मुख्य वक्ता बीके पुरुषोत्तम समेत लोगों ने भी अपने विचार रखे। अभियान के भरतपुर शहर में पहुंचने पर सारस सर्किल से होकर मानसिंह सर्किल, सूरजपोल से विश्व शांति भवन पर पहुंची जहाँ पर शहर के मेयर शिव सिंह भोट के द्वारा रैली के सदस्यों को माला पहनाकर भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम के दूसरे दिन अभियान को नदबई के लिए हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम के अंत में सभी को ईश्वरीय सौगात एवं साहित्य प्रदान किया गया।

किसानों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए यौगिक खेती अच्छी पहल: रविन्द्र चौबे

शिव आमंत्रण ➤ रायपुर। कृषि और जल संसाधन मंत्री रविन्द्र चौबे ने कहा, कि सकारात्मक सोच और यौगिक खेती से किसानों का सशक्तिकरण होगा और उनके जीवन स्तर को उपर उठाने में मदद मिलेगी। छत्तीसगढ़ में चलाए जा रहे इस ब्रह्माकुमारी संस्थान के अभियान में राज्य शासन और कृषि वैज्ञानिक भी सहयोग करेंगे। रविन्द्र चौबे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा शान्ति सरोवर में आयोजित किसान सशक्तिकरण अभियान के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने आगे कहा, कि छत्तीसगढ़ की धरती रत्नगर्भा है। यह राज्य खनिज सम्पदा से भरपूर है। प्रकृति ने हमें खूब संसाधन दिए हैं किन्तु किसानों के सामने जो चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ हैं, उनका निराकरण करने के लिए ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा

कृषि मंत्री रविन्द्र चौबे ने किसान सशक्तिकरण अभियान का शुभारम्भ किया।

किसान सशक्तिकरण अभियान चलाया जा रहा है। यह निश्चित रूप से किसानों के हित में मददगार सिद्ध होगा। उन्होंने बताया, कि राज्य में 43 प्रतिशत भूभाग में जंगल है। यहाँ आदिवासी अंचल में लोग जैविक खेती ही करते हैं। वे लोग बहुत ही कम रसायनिक खाद का प्रयोग करते हैं। आप एक बार पेण्ड्रा और मरवाही का चावल चख लें तो दंग रह जाएंगे। उसमें इतनी मिठास है कि बड़े बड़े वैज्ञानिक भी उसको देखकर आश्चर्य चकित रह जाते हैं कि कैसे ये लोग इतना अच्छा अन्न उत्पादित कर लेते हैं? इसलिए हमें यौगिक खेती की दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है। कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा बीके सरला ने कहा अभियान का पहला उद्देश्य किसानों को सशक्त बनाना है। दूसरा उद्देश्य उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है। किसानों को जैविक खेती के साथ ही राजयोग की शिक्षा देकर यौगिक खेती के लिए मार्गदर्शन करेंगे। इन्दिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर के कुलपति डॉ. एस. के. पाटिल, मासिक पत्रिका ज्ञानामृत के प्रधान सम्पादक बीके आत्मप्रकाश, क्षेत्रीय निदेशिका बीके कमल, माउण्ट आबू से आए मुख्यालय संयोजक बीके सुमन्त ने भी अपने विचार रखे। संचालन धमतरी सेवाकेन्द्र की संचालिका बीके सरिता ने किया।

स्व प्रबंधन

सृष्टि-चक्र के अंत में परमात्मा अपने वायदेनुसार आते हैं

बीके ऊषा,
स्व प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

मृत्यु के करीब इंसान को कोई कहे चलो तुम भगवान को याद नहीं कर सकते, तो तुम्हारे पास जो कुछ भी है उसका दान करके पुण्य तो कमा लो। तो वह दान भी नहीं कर सकेगा, क्योंकि उसको संशय रहता है कि अगर चौबीस घण्टे के बाद नहीं मरा तो? समय पर उसको भरोसा ही नहीं है इसीलिये न तो वह भगवान को याद कर सकता है और न ही वह दान करके पुण्य कमा सकता है। अगर भगवान भी तारीख, वार, समय,घड़ी बता दे तो कोई भी उसको याद नहीं कर पायेगा क्योंकि हमारा ध्यान भी समय के साथ जुड़ जाता है। इसीलिये भगवान ने केवल यह कहा है कि-बहुत गई थोड़ी रही, अब थोड़ी की भी थोड़ी रही है इसलिए अब ज्यादा वक्त नहीं है।

वर्तमान समय के प्राकृतिक असंतुलन की स्थिति को देखते हुए विज्ञान ने भी इस बात की पुष्टि कर दी है कि अब जिस प्रकार का परिवर्तन वातावरण में आ रहा है,यह भी बता रहा कि अब समय ज्यादा नहीं रहा है। दुनिया भर के वैज्ञानिक भी ग्लोबल वॉर्मिंग को लेकर चिंतित हैं कि दुनिया का तापमान अगर चार-पाँच डिग्री बढ़ गया तो इस सृष्टि पर मनुष्यों की हालत कैसी हो सकती है उसकी कल्पना शायद आज का मानव नहीं कर सकता। जिस प्रकार ग्रीन हाउस इफेक्ट बढ़ने लगा है, वातावरण में प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, ओजोन परत में छेद बढ़ते जा रहे हैं,और ऑक्सीजन का स्त्रोत वृक्ष कटते जा रहे हैं,इन्सान के जीने के लिये अति आवश्यक वस्तुएं प्राप्त नहीं हो रही है। यह सभी बातें इस बात की पुष्टि करतीं हैं कि अब यह समय ज्यादा नहीं चलेगा। एक बार हमारा जंगल विभाग के लोगों से मिलना हुआ। उनसे बातचीत करते समय उनसे पूछा कि संसार में इस जनसंख्या को जीवित रहने के लिये कितने प्रतिशत जंगल होने चाहियें? तब उन्होंने कहा, इस जनसंख्या को जीवित रहने के लिये कम से कम तेतीस प्रतिशत जंगल पूछने पर कि इस समय दुनिया के अन्दर अभी कितना प्रतिशत जंगल है? तब उन्होंने कहा कि कागजों में चौदह प्रतिशत है जबकि वास्तविकता के धरातल पर मात्र ग्यारह प्रतिशत और यह भी अगर नौ प्रतिशत हो जाए तो मनुष्य जीवन असंभव हो जाएगा। क्योंकि रात्रि के समय में वनस्पति जगत भी ऑक्सीजन लेने लगता है। आधी रात के बाद या ब्रह्ममुहर्त में वातावरण में सिर्फ दो प्रतिशत ऑक्सीजन हो जाता तभी सुबह के समय में कई लोगों को अस्थमा का अटैक या दिल का दौरा अधिक होता है। अब ऑक्सीजन की मात्रा का नौ प्रतिशत रह जाने पर तो मानव जीवन का अस्तित्व खतरे में आ जाएगा। जिस तरह प्राकृतिक असंतुनन के कारण संसार में बड़े पैमाने पर भूकम्प भी आ रहे हैं,ज्वालामुखी फट रहे हैं, चक्रवात-तूफान आ रहे हैं,और सुनामी लहरें उठ रही हैं। इसी तरह, मतभेद, जातिभेद, धर्मभेद भाषाभेद के कारण खून की नदियां बहनें लगी है और फिर यह बात भी तो है कि जो मिजाइलें बनाई हैं वे रखने के लिये तो नहीं बनाई हैं। उनका प्रयोग आज नहीं तो कल होना ही है। जब विनाश के सारे साधनों का कंप्यूटरीकरण हो गया है तो केवल एक बटन दबाने की देरी है कि पूरी दुनिया का विनाश हो सकता है। सोचने की बात यह कि संयुक्त राष्ट्र संघ चाहे कितने ही देशों से संधियों पर हस्ताक्षर करा ले कि विश्वयुद्ध न हो परंतु परिवर्तन की प्रक्रिया में पुरानी दुनिया की स्थापना होनी है। कहा जाता है कि-नर चाहत कछु और, होवत है कछु और। ईश्वरीय योजना के अनुसार यह दुनिया बदल कर नई दुनिया आने वाली है। इसीलिये जब सारे मिसाइलें और आणविक शस्त्रों का कंट्रोल कंमप्यूटर के अधीन है। अगर कंप्यूटर में वाइरस आ जाए, तो एक गलत संकेत मिलने से ही विनाश लीला शुरू हो सकती है। मान लो कि कमप्यूटर को सुरक्षित रखने लिए एन्टीवायरस प्रोग्राम भी डाल दिया जाए लेकिन मनुष्य के दिमाग में अगर कोई नकारात्मक वृत्ति का वाइरस आ जाय और मति भ्रमित होकर वह सोचे कि दबा दो बटन, खतम करो सब खेल, मरो और मारो,बस। तो कितनी देर लगेगी? क्रमशः....

समस्या समाधान

परमात्मा से मिलन तर्कों का विषय नहीं, एक अनुभूति है

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

बहुत महिमा है परमात्मा की वही सुखदाता है

बहुत महिमा है उस परमात्मा की जो वह ज्ञान का सागर है, प्रेम का सागर है, शांति का सागर है, महिमा तब ही होती है, जब कोई बहुत बड़ा-बड़ा काम करता है। कोई बहुत बड़ा आदमी है संसार में लेकिन वह अपने घर में है कुछ नहीं करता बहुत पढ़ा लिखा होकर भी कुछ करता नहीं है कोई उसकी महिमा गाएगा क्या। कोई जानेगा भी नहीं। कोई कुछ बड़ा अच्छा करता है गायन उसका ही होता है। उस परमात्मा ने बहुत सुख दिया है इसलिए उसको सुखदाता कहते हैं तो हमें उससे जुड़ जाना है उसके मिलन की सुखद अनुभूतियां करनी है

परमात्मा से मिलन मनाया जा सकता है

रोज सवेरे उठकर परमात्मा से मिलन बनाया जा सकता है और अगर कोई बहुत अच्छा योग अभ्यास कर ले तो जब चाहे मिलन मनाया जा सकता है। सारे दिन में 100 बार भी मना सकते हैं और उस मिलन की अनुभूति आपको यकीन दिलाएगी कि सच में परमात्मा से मिलन हो गया। जैसे मीठा कुछ खाने से हमें सोचना नहीं पड़ता कि मीठा था क्या उसकी मिठास स्वतः ही बताती है कि मीठा खाया है। भगवान से मिलन..... यह तर्कों का विषय नहीं यह अनुभूतियों का विषय है। तो इस मिलन की ओर हम चलेंगे पहले इनर जर्नी सभी अपने अंदर जाकर देखेंगे कि मैंने अपना इनर वर्ल्ड कैसा बनाया है।

अपने अंदर के संसार को देखना है

एक यह बाहर का संसार है एक अंदर का अपना संसार है वह अंदर का संसार मेरा कैसा है उसमें मैंने सबके लिए प्रेम भरा है? सदभावनाएं भरी हैं? या नफरत भरी है बदले की भावना भरी है? या सुख देने की भावना भरी है, ईर्ष्या द्वेष भरा है या आगे बढ़ाने की भावना भरी है। हमारा अंदरूनी संसार कैसा है अंदर क्रोध की अग्नि जल रही है या शांति की शीतल छाया है सब चेक करेंगे।

समस्या कमजोर मन की रचना है

हम जानते हैं आत्मा में 7 गुण होते हैं सुख शांति आनंद प्रेम शक्ति पवित्रता ज्ञान हमें उन को स्वीकार करना है मैं आत्मा शांत स्वरूप हूं, शांति मेरा नेचर है स्वीकार करें अपने अंदर भेज दे यह सच है मेरा मूल गुण शांति है क्रोध नहीं ऐसे ही दूसरे सभी गुणों को भी स्वीकार करेंगे। हम याद रखें हमारे हर एक संकल्प से एनर्जी क्रिएट होती है अगर हम नेगेटिव संकल्प क्रिएट कर रहे हैं तो नेगेटिव एनर्जी क्रिएट हो रही है जो हमारे ब्रेन में पहुंच रही है बॉडी पर इफेक्ट कर रही है चारों ओर का वातावरण वैसा बन रहा है। जितने सुंदर संकल्प हमारे मन में चलेंगे इतनी पावरफुल एनर्जी क्रिएट होगी जो अनेक समस्याओं को समाप्त करेगी। समस्याएं और कुछ नहीं कमजोर मन की रचना है।

हम सर्वशक्तिमान के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिमान इससे हमारी सोई हुई शक्तियां जागृत हो जाएंगी

हमें परमात्मा से कनेक्शन जोड़कर शक्तियां लेनी है उससे कुछ मांगना नहीं है कि भगवान हमें शांति दो यह दो वह दो। वह कह रहा अपने को इतना योग्य बनाओ कि तुम दूसरों की समस्या भी हल कर सको। वो परमात्मा हमारा लेवल ऊंचा उठा रहा है अब इस समय। उससे मांगने की जरूरत नहीं सोचो टाइगर का बच्चा क्या होगा? टाइगर ही होगा न। टाइगर का बच्चा अपने फादर को कहेगा कि मुझे थोड़ी ताकत दे दो। तो हमें भी भगवान से कुछ मांगना नहीं वह कहता है याद करो तुम सर्वशक्तिमान की संतान मास्टर सर्वशक्तिमान हो। तो ऐसी याद से सोई हुए शक्तियां जागृत हो जाएंगी। रोज सवेरे उठकर अपने को विचार दें कि मैं सर्वशक्तिमान की सन्तान मास्टर सर्वशक्तिमान हूं। इसे हम स्वीकार कर लें सवेरे उठते ही 108 बार लिखना है इसे। इससे हमारी सोई हुई शक्तियां जागृत हो जाएंगी।

अलबिदा डायबिटीज और खुशनुमा जीवन के सूत्र बताए

शिव आमंत्रण दीव। ब्रह्माकुमारीज़ और जायंट ग्रुप के संयुक्त तत्वावधान में दीव में 'अलविदा डायबिटीज एवं खुशनुमा जीवन जीने की कला' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कलेक्टर सलोनी राय, जिला पंचायत उपाध्यक्ष अश्विनी भारत, जायंट ग्रुप के अध्यक्ष कदर कुरैशी, दीव सेवाकेंद्र प्रभारी बीके गीता, उना सेवाकेंद्र प्रभारी बीके हीरा ने अपने विचार रखे। मुख्य वक्ता माउण्ट आबू के ग्लोबल हॉस्पिटल से आए मधुमेह रोग विशेषज्ञ बीके डॉ. श्रीमंत साहू और औरंगाबाद से आई बीके डॉ. डोनिका ने मधुमेह से मुक्ति व खुशनुमा जीवन के सूत्र बताए।

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम की शुरुआत करते अतिथि।

ब्रह्माकुमारी बहनों ने दिया ईश्वरीय संदेश

ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात बीके नैना के साथ कोतवाल एवं अन्य।

शिव आमंत्रण अतरौली। प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्व विद्यालय अतरौली बीके नैना बहन ने ईश्वरीय संदेश देते हुए सीईओ पंकज कुमार, कोतवाल राजीव सिरोही साथ में है एडवोकेट संजीव, राजेन्द्र मथुरिया और बीके ममता व लक्ष्मी।

ढाई करोड़ लोगों तक पहुंचा म्हारो राजस्थान, समृद्ध राजस्थान

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माउंट आबू एसडीएम रवींद्र गौस्वामी तथा अन्य।

शिव आमंत्रण आबूरोड़। ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा समस्त राजस्थान में लोगों के सर्वांगिण विकास के लिए सोशल एक्टिविटी ग्रुप, सोशल विंग, ग्राम विकास विंग, मेडिकल तथा हृदयरोग निवारण विभाग द्वारा आयोजित म्हारो राजस्थान के सभी यात्राओं के आबू रोड पहुंचने पर समापन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सोशल एक्टिविटी ग्रुप के अध्यक्ष बीके भरत, मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करूणा ने लोगों को शुभकामनाएं देते हुए इस तरह के और आयोजन करने की उम्मीद जतायी। इस मौके पर बीके शांता, बीके चन्द्रकला, बीके पूनम, बीके भानू, बीके मोहन, बीके जितेन्द्र, बीके धीरज, बीके अमरदीप, बीके सचिन, बीके रामसुख मिश्रा, बीके रवि, बीके कृष्णा, बीके चन्दा समेत कई लोग उपस्थित थे।

इंटरफेथ डायलॉग में दिया परमात्मा का सच्चा परिचय

स्कोन टेम्पल के प्रेसिडेंट केशव मुरारी, बीके लता को सर्टिफिकेट प्रदान करते हुए।

शिव आमंत्रण दिल्ली। दिल्ली के रोहिणी स्थित इस्कोन टेम्पल में विशेष इंटरफेथ डायलॉग का आयोजन हुआ जिसमें सभी धर्मों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर देरावाल सेवाकेंद्र से राजयोग शिक्षिका बीके लता ने ब्रह्माकुमारिज का प्रतिनिधित्व करते हुए सभी को स्वयं का और परमात्मा का सच्चा परिचय दिया। अंत में इस्कोन टेम्पल के प्रेसिडेंट केशव मुरारी द्वारा उन्हें सर्टिफिकेट प्रदान किया गया।

दिया परमात्म अवतरण का संदेश

एसएसबी निरीक्षको के साथ बीके सरिता और बीके पिंकी।

शिव आमंत्रण श्री नगर गढ़वाल उत्तराखंड। बीके सरिता बेन और बीके पिंकी ने श्री भदोनी जी, माननीय डीआईजी और सब भारत के सीमा सुरक्षा बल अधिकारीयों और निरीक्षकों को ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् परमात्म अवतरण का संदेश दिया।

संदेश

जल, विमान परिवहन सेवा प्रभाग द्वारा अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित

वर्तमान पीढ़ी को मूल्यों की शिक्षा देना चुनौती: अमृता शरण

शिव आमंत्रण आबू रोड। एयर इंडिया (कार्मिक)के निदेशक अमृता शरण ने कहा, कि जरूरत से ज्यादा भौतिक साधनों का उपयोग करने से मनुष्य की जीवनशैली असंतुलित होती जा रही है। इसी वजह से वर्तमान पीढ़ी को प्राचीन मूल्यों की शिक्षा देकर उनको आचरण में लाना चुनौतीपूर्ण कार्य है। युवा पीढ़ी हर बात को तर्क की दृष्टि से जांचती है। ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा सिखाया जाने वाला सहज राजयोग हर दृष्टि से जीवन मूल्यों में निखार लाने वाला है। आज के समय में हर आयु के वर्ग के मनुष्य को राजयोग की नितांत आवश्यकता है। विधिपूर्वक राजयोग करने से मन अपने आप ही आध्यात्मिक ऊर्जा के केंद्र पर एकाग्र हो जाता है। वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ज्ञान सरोवर अकादमी परिसर में संगठन के जल, विमान परिवहन सेवा प्रभाग द्वारा स्वर्णिम भारत की पुनर्स्थापना के लिए मूल्य विषय पर आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहीं थीं। एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया के संयुक्त जी.एम, जी.पी. सिंह ने कहा, कि संगदोष में आकर मनुष्य अपने विवेक को नष्ट कर देता है। सतसंग से जीवन के दुर्गुण नष्ट होकर आत्मा में सदुगणों का प्रवेश होने लगता है। ज्ञान सरोवर निदेशिका राजयोगिनी डॉ. बीके निर्मला ने कहा, कि अध्यात्मिक शक्ति से जीवन मूल्यों को अपनाने से फिर से रामराज्य लाया जा सकता है। परिवहन प्रभाग की अध्यक्षा बीके मीरा, प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके कमलेश, मुख्यालय संयोजक बीके संतोष ने भी विचार व्यक्त किए।

दीप प्रज्जवलित कर सम्मेलन का उदघाटन करते अतिथिगण।

गॉड ऑफ गॉड्स फिल्म का विशेष शो सिरसा में भी दिखाया गया

देश की आजादी के लिए एक मिशन था मीडिया:बीके कोमल

कोल्हापुर में हुए जिला स्तरीय पत्रकार सेमीनार का उद्घाटन करते अतिथि।

शिव आमंत्रण ➤ कोल्हापुर। पीस न्यूज के सम्पादक बीके कोमल ने कहा, कि पहले देश की आजादी के लिए एक मिशन के रुप में मीडिया की शुरुआत हुई था परन्तु आज बदलते दौर में कमिशन हो गयी है। इसलिए पत्रकारों को इसके प्रति गम्भीरता से सोचना चाहिए। महाराष्ट्र के कोल्हापुर में ज़िला स्तरीय पत्रकारों के लिए सेमिनार का आयोजन किया गया। वर्तमान समय पत्रकारिता की दशा और दिशा विषय पर आयोजित सेमिनार में ज़िलाभर के प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के करीब दो सौ पत्रकार शामिल हुए। सेमिनार में मुख्य वक्ता के रूप में उन्होने यह विचार व्यक्त कि ये। वहीं सम्राट फडणवीस ने कहा, कि सोशल मीडिया ने समाज में सूचनाओं के जंजाल से सबको भ्रमीत कर दिया है। इसलिए सूचनाओं को प्रेषित करने से पहले उसकी सत्यता को प्रमाणित करें। जिला रिपोर्टर एसोसिएशन तथा ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के मीडिया प्रभाग कोल्हापुर के संयुक्त तत्वावधान में वर्तमान समय की पत्रकारिता की दशा और दिशा विषय पर आयोजित सेमिनार में जिले भर के करीब दो सौ पत्रकार शामिल हुए। इसमें ब्रह्माकुमारीज संस्था के गॉडलीवुड स्टूडियो के पीस न्यूज के हेड तथा संस्थान के जनसम्पर्क अधिकारी बीके कोमल, दैनिक सकाल के सम्पादक सम्राट फडणवीस, जिला रिपोर्टर संघ के अध्यक्ष सुधीर निर्मणे, पुणे सबजोन प्रभारी बीके सुनन्दा ने भी अपने विचार रखे।

अवगुणों को पहचानकर हम जी सकते हैं तनावमुक्त जीवन

पुलिस कर्मियों के साथ बीके नारायण एवं अन्य भाई -बहनें।

शिव आमंत्रण ➤ इंदौर। मध्यप्रदेश के मनावर सेवाकेन्द्र पर पुलिसकर्मियों के लिए तनावमुक्त जीवन जीने की कला विषय पर ज्ञान संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसको इंदौर से धार्मिक प्रभाग के कार्यकारी सदस्य बीके नारायण ने तनाव के अनेक कारणों के बारे में बताते हुए उससे निजात के तरीके सुझाए। बीके नारायण ने इस अवसर पर कहा, आज का मानव किसी न किसी रूप से तनावग्रस्त है। किसी को पैसे को लेकर तनाव है, किसी को पड़ोसी या रिश्तेदार की खुशियों से तनाव है। कोई दूसरे की उन्नति को लेकर तनाव में है। वर्तमान में अध्यात्म से तनाव मुक्त जीवन जीया जा सकता है। खुद के अवगुणों को अपनाते हुए उसे अध्यात्म से जोड़कर तनाव को दूर किया जा सकता है।

मूल्यनिष्ठ शिक्षा का सुंदर अनुभव माउंट आबू में किया

दीप प्रज्ज्वलन करते अतिथि।

शिव आमंत्रण ➤ मंदसौर। ब्रह्माकुमारीज के मंदसौर सेवा केंद्र आत्म कल्याण भवन पर शिक्षक दिवस पर शिक्षकों के सम्मान समारोह में कार्यक्रम रखा गया। मंदसौर यूनिवर्सिटी के कुलपति नरेंद्र नाहटा ने कहा, कि शिक्षा का अर्थ है जीवन में मूल्य निष्ठ शिक्षा का होना और मैंने माउंट आबू में यह सुन्दर अनुभव किया। सेवा केंद्र संचालिका बीके समिता ने संस्था के शिक्षा प्रभाग द्वारा हो रही सेवाओं की जानकारी दी।

स्मरण शक्ति बढ़ाने और खुश रहने के लिए राजयोग मेडिटेशन बहुत प्रभावी तरीका: गोयल

सभा को संबोधित करते हुये बीके गौरव गोयल।

शिव आमंत्रण ➤ मोहाली। बीके गौरव गोयल ने मुख्य वक्तव्य में खुशनुमा जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हुये बताया, कि छोटा बच्चा दिन में 400 बार मुस्कुराता है पर बड़ा होने पर उसकी मुस्कुराने की क्षमता कम होते आम तौर पर 40 तथा 20 तक आ पहुंची है। उन्होंने कहा कि यह भी सत्य है कि कोई भी व्यक्ति, वैभव व वस्तुएं सदाकाल की खुशी प्रदान नहीं कर सकती। मोहाली (पंजाब) ब्रह्माकुमारीज़ के सुख शांति भवन फेज 7 में आध्यात्मिक उपचार द्वारा खुशी व स्वास्थ्य मेडीटेशन रिट्रीट का आयोजन किया गया जिसमें डाक्टर, आध्यापकों, व्यापारियों, उद्योगपतियों, न्यायविदों ने भाग लिया।

आयोजन

नागरपुर के रिट्रीट सेंटर में ईशु दादी के आगमन पर कार्यक्रम आयोजित

ब्रह्माकुमारीज़ का विश्व शांति सरोवर पवनसुत हनुमान की तरह सूर्य के पास आसमान में उड़ान भर रहा है: बीके रजनी

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अतिथि।

शिव आमंत्रण ➤ नागपुर। बीके प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से जामठा स्थित रिट्रीट सेंटर विश्व शांति सरोवर के प्रथम वर्धापन दिवस पर माऊंट आबू निवासी राजयोगिनी ईशु दादी और बीके आत्मप्रकाश के आगमन पर उनका आतिशबाजी से स्वागत किया गया। इस अवसर पर महापौर नंदा जिचकार, डीसीपी गजानन राजमाने, सुशील अग्रवाल, बीके देवकुमार, बीके सीता-अमरावती, बीके रूक्मिणी-अकोला, बीके कुसुम-चंद्रपुर, बीके लता-परतवाडा, बीके कविता आदि उपस्थित थे । ईशु दादी के स्वागत अवसर पर नागपुर के जादूगर प्रशांत भावसार ने जादू के सुंदर प्रयोग प्रस्तुत कर सभी को मोहित कर दिया। विश्व शांति सरोवर की संचालिका बीके रजनी ने प्रथम वर्धापन दिन की खुशी जाहिर करते हुए कहा, की पिछले साल जानकी दादी ने इस भवन का उद्घाटन किया। यह सरोवर दादीयों की दुआओं से पल्लवीत होता जा रहा है। दिवंगत पुष्पा राणी दीदी की आशाएं पूर्ण हो रही हैं। पवनसुत हनुमान की तरह सूर्य के पास आसमान में उड़ान भर रहा है।

अलबिदा डायबिटीज

डायबिटीज से बचाव की युक्तियां

बीके डॉ. श्रीमंत कुमार
ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

ये परिवर्तन करें...

हमारा जीवन शैली में बदलावः विगत कुछ वर्षो के अंदर ही भारत में हर किसी कि जीवन शैली में बहुत कुछ परिवर्तन दिखाई देता है और यही मुख्य कारण है घर घर में डायबिटीज एक महामारी के रूप में फैलाने का। इसलिए चलें हम चर्चा करते हैं क्या क्या परिवर्तन करना है।

पर्याप्त विश्राम और प्रातः जागरण...

स्वस्थ्य रहने के लिए हमें कम से कम 4-5 घंटा नींद करना ही चाहिए। अति नींद्रा या अनिंद्रा स्वास्थ्य के लिए हानीकारक है। इसलिए रात्री 10-10:30 बजे तक सोकर 3-4 बजे सुबह जाग जाएं। कहावत है Early to bed and Early to rise Makes a man Healthy, wealthy & wise.भारत में कुछ दशक पहले हर कोई शीघ्र ही जाग जाता था। वैज्ञानिकों का मानना है कि देर रात तक जागरण कर देरी से उठने के कारण हमारे शरीर में Stress Hormones का क्षरण अत्यधिक हो रहा है जिसके कारण फिर डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, ह्रदय रोग आदि आदि बीमारीयां पैदा हो रही है। इसलिए इन सभी बीमारीयों से बचने के लिए हमें शीघ्र ही सोकर प्रातः जागरण करना ही होगा।

नियमित मेडिटेशन का अभ्यास...

डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, ह्रदयरोग, कैंसर आदि असंक्रामक बीमारीयों का एक मुख्य कारण मानसिक तनाव है। और तनाव के कारण अधिकतर मनुष्य नशीली चीजों का सेवन कर रहे हैं जिसके और ही दुष्प्रभाव का शिकार हो रहे हैं। मन को तनाव व दुश्चिन्ता (Tension) से मुक्त करने का एक ही मात्र उपाय Meditation करना है। सकारात्मक सोच विचार से ही हम तनाव से मुक्त हो सकते हैं। Meditation is an art of positive thinking. (सकारात्मक सोच का एक सुंदर विज्ञान है)। इसलिए मेडिटेशन का नियमित अभ्यास से सिर्फ डायबिटीज नहीं परंतु अनेकानेक तनावजनित बीमारीयों से स्वयं को बचा सकते हैं।

नियमित व्यायाम और कर्मठ जीवन....

विज्ञान के साधनों का उपयोग के साथ-साथ आज अधिकतर मनुष्य आराम पसंद (Sedentary) हो चुके हैं। स्वस्थ्य जीवन के लिए नाश्ते से पहले कम से कम आधा पौना घंटा व्यायाम जरूर करना चाहिए। तेज चलना (Brisk walking) वा cycling करना बहुत अच्छा है। इसके आलावा कर्मठ रहना अर्थात घर का ऑफिस का कार्य करना भी आवश्यक है।

संतुलित आहार...

आज से ढ़ाई हजार साल पहले Hippocrates कह के गये हैं मानव तुम्हारा भोजन दवाई की तरह हो जाए। (Let food be they medicine) सच में अगर मनुष्य भोजन को दवाई की तरह खाता तो आज इतनी सारी बीमारीयां नहीं होती। भोजन को दवाई की तरह खाना अर्थात हमें समझना होगा कि क्या खाना है, कितना खाना है, कब खाना है और कैसे खाना है? इसे ही संतुलित आहार कहा जाता है। हमारे भोजन में अधिक से अधिक मात्रा में साग सब्जियां तथा फल आदि होना चाहिए लगभग 50 प्रतिशत साथ में अनाज, दालें, दूध, दही लस्सी आदि भी होना चाहिए। ताकि उर्जा प्राप्त करने के साथ-साथ शारीरिक गठन और अनेकानेक रसायनिक प्रतिक्रिया में भी सहयोग मिले। हमें रोज 8-10 ग्लास पानी भी पीना चाहिए। हमारा भोजन इसलिए शुद्ध हो सात्विक हो न कि तामसिक, हमारा भोजन का परिमाण (Quantity) भी शारीरिक श्रमानुसार होना चाहिए ताकि हमारा वजन भी उच्चता अनुसार सटीक हो (Ideal body weight)।

नशीली चीजों से दूर (Deaddiction)

नशीली चीजें जैसे कि तंबाकू, सिगरेट, भांग, गांजा, चरस और मद्यपान से दूर रहना होगा। अधिक मात्रा में चाय कॉफी भी हानिकारक है क्योंकि (Addictive) है।

यहां करें संपर्क

बीके जगजीत मो. 9413464808 पेशेंट रिलेशन ऑफिसर, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोही, राजस्थान

शिक्षा का अर्थ होना चाहिए मानव से मानव को जोड़ना

शिव आमंत्रण > गुरूग्राम। वर्तमान शिक्षा नीति में मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता है। आध्यात्मिकता के समावेश से ही एक बेहतर शिक्षा प्रणाली की स्थापना हो सकती है। उक्त विचार दिल्ली के माननीय उप-मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने ब्रह्माकुमारीज़ के भोड़ाकलां स्थित ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर में शिक्षाविदों एवं काम करने वाली महिलाओं के लिए आयोजित दो अलग-अलग कार्यक्रमों को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा, कि श्रेष्ठ समाज के विकास में शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। माननीय उप-मुख्यमंत्री ने कहा, कि शिक्षा का अर्थ केवल मानव संसाधन विकसित करना नहीं अपितु मानव को मानव से जोड़ना होना चाहिए। महिलाओं के लिए आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि समाज परिवर्तन के कार्य में महिलाओं की विशेष भूमिका है।

कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते अतिथि।

उन्होंने कहा कि जीवन की मूल शिक्षाएं तो एक माँ ही अपने बच्चे को बेहतर ढ़ग से दे सकती है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का पहला पाठ परिवार से ही शुरू होता है और जिसका मूल आधार केवल माँ है।

ओआरसी की निदेशिका बीके आशा ने कहा, कि मातृशक्ति और मातृभूमि दोनों ही स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं। इसलिए दोनों का जहां सम्मान होता है, वहां पर ही देवता रमण करते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त सचिव बीके बृजमोहन ने अपने उद्बोधन में कहा, कि अगर हम चाहते हैं कि भारत फिर से विश्व गुरू बने तो महिलाओं का सम्मान ज़रूरी है। उन्होंने कहा, कि महिलाओं के चरित्र की रक्षा करना हम सबका कर्तव्य होना चाहिए।

शाश्वत यौगिक खेती से ही होगा हमारे देश में विकासः दहिया

शिव आमंत्रण > पानीपत। किसान यूनियन के हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष सुरेश दहिया ने शाश्वत यौगिक खेती के गतिविधियों की सहारना की। उन्होंने कहा शाश्वत यौगिक खेती को अपनाने से हमारे देश में विकास होगा। वह ब्रह्माकुमारीज ज्ञान मानसरोवर में किसान सशक्तिकरण सम्मेलन में बोल रहे थे। सम्मेलन में दो हजार से अधिक किसानों ने भाग लिया। ग्रामीण प्रभाग की अध्यक्ष बीके सरला ने शाश्वत यौगिक खेती में मेडिटेशन के महत्व को समझाया। महाराष्ट्र के बीके बालासाहेब, ज्ञान मानसरोवर के निदेशक बीके भारत भूषण ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि एवम् उपस्थित श्रोतागण।

मन के संतुलन से होती है जीवन की यात्रा सुरक्षितः रतन

संबोधित करते हुए चेयरमेन रमेश चंद्र रतन।

शिव आमंत्रण > आबूरोड। चाहे सड़क की यात्रा हो या जीवन की यात्रा दोनो में ही सुरक्षा महत्वपूर्ण है। जीवन कीमती है इसलिए जीवन की सुरक्षा के लिए मन का संतुलन जरूरी है। उक्त उद्गार रेलवे मंत्रालय भारत सरकार के पैसेन्जर सर्विस कमेटी के चेयरमैन रमेश चन्द्र रतन ने व्यक्त किये। वे ब्रह्माकुमारीज संस्था के शांतिवन में यातायात एवं परिवहन प्रभाग की ओर से सड़क, सुरक्षा और आध्यात्मिकता विषय पर आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने संस्थान की सेवाओं की सराहना भी की। अजमेर डिविजन के डीआरएम राजेश कुमार कश्यप, यातायात एवं परिवहन प्रभाग की अध्यक्षा बीके डॉ. निर्मला, जिला परिवहन अधिकारी मनीष शमा, प्रभाग की वरिष्ठ सदस्या बीके कुन्ती, बीके कविता, बीके नीरजा समेत कई लोगों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये।

रैली से दिया संदेश, अपने शहर को न करें मैला, साथ में लेकर आएं थैला

स्वच्छता का संदेश देते रैली में सहभागी सदस्य।

शिव आमंत्रण > राजगढ़। मध्यप्रदेश के राजगढ़ में स्वच्छ एवं प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत जन जागृति रैली निकाली गई। भंवर कॉलोनी स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के शिव वरदान भवन से रैली शुरू की गई जिसका उद्घाटन राजगढ़ नगर पालिका अध्यक्ष मंगला गुप्ता, समाजसेवी शैलेश गुप्ता, राजगढ़ जिला प्रभारी बीके मधु ने शिव ध्वज दिखाकर किया। इस अवसर पर अतिथियों एवं संस्था के सदस्यों ने प्लास्टिक पॉलिथीन को पूर्णरुपेण प्रतिबंधित करने का लोगों से आह्वान किया। नपा अध्यक्ष मंगला गुप्ता ने कहा पॉलिथीन बैग का उपयोग ना करके कपड़े, जूट के बैग उपयोग करने की अपील की। साथ ही सभी को जूट के बैग वितरित किए। जिला प्रभारी बीके मधु ने कहा, पॉलिथीन व प्लास्टिक का उपयोग करने से कैंसर जैसी घातक बीमारियां हो रही है। बीके सुरेखा ने पॉलीथिन, प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने की प्रतिज्ञा दिलाई।

सीओपी 14 के समेलन में ब्रह्माकुमारीज़ शामिल

शिव आमंत्रण > नई दिल्ली। संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन टू कॉम्बैट डेजर्टिफिकेशन, पार्टियों का सम्मेलन 14 यानी यूएनसीसीडी सीओपी 14 इस वर्ष भारत की राजधानी में सम्पन्न हुआ। हर दो बरस में एक बार यह सम्मेलन आयोजित किया जाता है। यह कार्य म पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत आयोजित हुआ जिसमें सिविल सोसायटी ऑर्गनाइज़ेशन कम्यूनिटी के तहत एक पर्यवेक्षक संगठन के रूप में पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ ने सहभागिता की। आध्यात्मिक क्षेत्र से जुडी सिर्फ ब्रह्माकुमारी संस्था ने इसमे भाग लिया था।

शाश्वत यौगिक खेती का अवलोकन करने के लिए उपस्थित सीओपी 14 के डेलीगेट्स।

इस सम्मेलन का विशेष उद्देश मरुस्थलीकरण, भूमि गिरावट और सुखा जैसी कई समस्याओं के समाधान हेतु विचार विमर्श करना था जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ से बीके राजेश दवे, बीके जॉन, बीके शांतनु, बीके स्वाति, बीके पारुल और बीके अनिता और अन्य बीके सदस्य शामिल हुए। ब्रह्माकुमारीज द्वारा विशेष लगाये गए बूथ में शाश्वत योगिक खेती के उद्देश्यों, प्रक्रिया, प्रयोगों और शोध के परिणामों को पोस्टर्स के जरिए दर्शाया गया साथ ही संस्थान के सोलार वन पॉवर प्रोजेक्ट की भी जानकारी दी गई।

नई राहें

एकता, शांति और समृद्धि का आधार आध्यात्म

आध्यात्म मतलब आत्मा का अध्ययन। स्व का अध्ययन और जीवन की वास्तविकता का अध्ययन। इसमें तीन चीजें महत्वपूर्ण हैं अध्ययन, आराधना और आत्मा। जन्म के बाद इस जीव जगत में आते ही शिक्षा संस्कार के माध्यम से हम जीवन का ककहरा सीखते हैं। अध्ययन करके योग्य बनते हैं। बचपन से अध्ययन की नींव जितनी मजबूत होती है जीवन रूपी भवन भी उतना सुंदर, सुखद और शांतिमय रहता है। अध्ययन के साथ-साथ हम नैसर्गिक रूप से अपने माता-पिता, मित्र-संबंधियों के संपर्क में आने पर आराधना भी सीखते जाते हैं। चूंकि आध्यात्म एक आंतरिक और स्व की खोज है इसलिए आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए यह क्षणिक या दिनचर्या का हिस्सा न होकर हर क्षण आराधनामय होता है। आध्यात्मिक मार्ग पर पथिक हर पल ईश्वर की याद और प्यार में खोया रहता है। जैसे-जैसे चिंतन बढ़ता जाता है उसकी थाह की गहराई भी बढ़ती जाती है। फिर यहां से शुरू होता है आत्मा के अध्ययन का सिलसिला। इस भौतिक शरीर में विराजमान आत्मा ही वह ज्योतिपुंज है जो देह की दैहिक क्रियाओं से लेकर जीवन के सभी कर्मकांड को साकार करने में दिशा-निर्देशन का कार्य करती है। आत्मा की तीन शक्तियां हैं-मन, बुद्धि और संस्कार। मन सोचने का कार्य करता है, बुद्धि सही-गलत का निर्णय लेती है और फिर वह विचार कर्म में बदल जाता है, जो कालांतर में संस्कार बन जाता है।

एकता : जब हम आध्यात्म के माध्यम से स्व की खोज में जुट जाते हैं, तो सारी विषमताएं, मानसिक, भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिधि नगण्य हो जाती हैं। आध्यात्म हमें सिखाता है कि हम देह नहीं एक आत्मा हैं। इस नाते विश्व के सभी मनुष्य आत्मिक रूप से भाई-भाई हैं। जब मानस पटल पर ये भाव सदा काल के अंकित हो जाते हैं, तो आत्मा में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का उद्भव होने लगता है। वह देश, काल, समय और परिस्थिति की परिधि से निकल एकात्म भाव में टिक जाती है। फिर हर प्राणी मात्र के प्रति दया, करुणा, अपनापन और स्नेह का भाव जागृत होने लगता है। दूसरों का दुःख अपना दुःख और दूसरा का सुख अपना सुख महसूस होने लगता है। सारी विषमताएं खत्म होने से आत्मा जो है, जैसा है की स्वीकार्यता के साथ आगे बढ़ती जाती है। आत्मिक भाव होने से आत्मा धर्म, पंथ और संप्रदाय से निकलकर विश्व एकता के भाव को साकार करने में लग जाती है।

शांति : शांति आत्मा का स्वधर्म है। गले का हार है। निजी संस्कार है। प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में शांति चाहता है। पर शांति कैसे आएगी इस पर बहुत कम लोग ही विचार करते हैं। आध्यात्म में खुद की खोज करने की प्रक्रिया में व्यर्थ विचार समाप्त हो जाते हैं। मन का कलह-क्लेश मिट जाता है। इससे जीवन में आत्मिक शांति की महसूसता होने लगती है। जब प्राणी मात्र में एक-दूसरे के विचारों को सम्मान देने, आदर देने और स्वीकार्यता का भाव आ जाता है, तो जीवन में शांति का समावेश होने लगता है। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए यदि जीवन में सच्ची शांति चाहिए तो आध्यात्म के अलावा दूसरा कोई मार्ग नहीं है। आध्यात्म के बल से ही विश्व शांति और विश्व एकता का स्वप्न साकार हो सकता है। इसके लिए जरूरी है कि ज्यादा से ज्यादा लोग आध्यात्म से जुड़े। हमारी संस्कृति सिखाती है सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया। सब सुखी हों और सभी निरोग हों।

समृद्धि : जहां एकता और शांति है, वहां समृद्धि अपने आप आ जाती है। क्योंकि इनकी कड़ी एक-दूसरे से जुड़ी है। एकता से घर-परिवार और समाज में शांति आती है और जहां शांति है वहां समृद्धि भी आ जाती है। पर आज भौतिकजगत में मनुष्य इतना रम गया है कि वह मूल जड़ को भूलकर समृद्धि को ही हकीकत मान बैठा है। समृद्धि को ही जीवन का वास्तविक सत्य मानकर दिन-रात दौड़ रहा है। इससे जहां एकता की जगह अनेकता का भाव बढ़ रहा है वहीं परिवार बिखर रहे हैं। आपस में शांति की जगह कलह-क्लेश बढ़ता जा रहा है। प्रेम की जगह नफरत और अहिंसा की जगह हिंसा बढ़ रही है। अतः अब समय आ गया है कि फिर से हम अपने जीवन की वास्तविकता के बारे में गहराई से अध्ययन करें। जिस उद्देश्य से हम इस दुनिया में आए थे क्या वह पूरा करने में प्रयासरत हैं ? क्या हम आत्म विश्वलेषण, आत्म चिंतन की धारा पर चलकर स्व उन्नाति की ओर बढ़ रहे हैं? जीवन की शांति कहीं खो तो नहीं गई है? समृद्धि पाने में एकता और शांति की कुर्बानी तो नहीं दे दी है? आत्मा के मूल गुण सुख, शांति, प्रेम, ज्ञान, पवित्रता, शक्ति, आनंद को बिसरा तो नहीं दिया है? मन के गुलाब होकर कहीं बेलगाम घोड़े की तरह जीवन डमाडोल तो नहीं हो रहा है? हम भगवान की मानते हैं या भगवान को मानते हैं? ये वो सवाल हैं सदा मन मधुबन में याद रखना होगा ताकि जीवन पथ पर आध्यात्म का राही अपने लक्ष्य की ओर सदा अग्रसर होता रहे। आध्यात्म ही एकमात्र जरिया और उपाय है जिससे विश्व में फिर से एकता, शांति और समृद्धि आएगी।

लेखक शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक हैं

कार्यक्रम में रशिया के जाने-माने लोग हुए शामिल

मॉस्को में ब्रह्माकुमारीज़ के 30 वर्ष पूर्ण होने पर कार्यक्रम आयोजित, वीडियो से बताई सेवाओं की एक झलक

अतिथि एवं विविध कलाकारों के साथ बीके चक्रधारी, बीके सुधा और बीके विजय।

शिव आमंत्रण मास्को (रशिया) बेहतर विश्व के निर्माण के लिए योगदान करने की प्रेरणा एवं आध्यात्मिक ज्ञान देते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं को 30 वर्ष पूर्ण हो गए है। 30वीं वर्षगाठ के उपलक्ष में 'एनचांटेड बाय प्यूरिटी' विषय के तहत एंजेल हाउस रिट्रीट सेंटर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान वोस्टोचनी डीगुनिनो म्युनिसिपल डिस्ट्रिक्ट के डेप्युटिज ऑफ काउंसिल के सदस्य गैलिना निकोलायेवना, नोस्फियर स्पिरिचुअल एंड इकोलॉजीकल असेंबली ऑफ द वर्ल्ड के प्रेसिडेंट डॉ. गोर्डिन, दुदोवा वासिलीवत्रा, इंटरथेनिक महिला क्लब की अध्यक्ष केवजेम, 'मामा' आर्गेनाइजेशन के अध्यक्ष अगुलोव समेत कई गणमान्य अतिथि मौजूद रहे। ब्रह्माकुमारीज़ को गोल्डन डिप्लोमा और मैडल से भी नवाज़ा गया। संस्थान द्वारा रशिया में की गयी सेवाओं की विस्तार से विडियो दिखाई गयी, जिसके पश्चात, रशिया, सी.आई.एस और ब्रह्माकुमारीज़ की रीज़नल को-ऑर्डिनेटर बीके चक्रधारी, मास्को में ब्रह्माकुमारीज़ की डायरेक्टर बीके सुधा और वरिष्ठ राजयोग शिक्षक बीके विजय ने परमपिता परमात्मा का धन्यवाद व्यक्त किया।

नैरोबीः चीन के व्यापारियों के लिए रिट्रीट

शिव आमंत्रण नैरोबी। केन्या के नैरोबी स्थित करीबन 169 चायनीज़ व्यापारियों के लिए विदेश में पहली खबर केन्या के नैरोबी स्थित अफ्रीका रिट्रीट सेंटर में तकरीबन 169 चायनीज़ व्यवसाईयों के लिए विशेष रिट्रीट आयोजित की गई। मास्टर जिजिंग के नेतृत्व में आए इस चाइनीज़ समूह को साउथ अफ्रीका में ब्रह्माकुमारीज़ की रीजनल को-ऑर्डिनेटर बीके वेदांती ने मार्गदर्शित किया। आगे पॉज फॉर पीस, टीम बिल्डिंग, स्पिरिचुअल एक्सचेंज और कई गहन विषयों के तहत विविध गतिविधियों के माध्यम से बीके प्रतिभा, बीके दीप्ती और बीके प्रिया ने सभी प्रतिभागियों को खुशनुमा जिंदगी जीने का कला सिखाए।

डॉ. बिन्नी ने दिया अफ्रीका मॉरीशस में शांति का संदेश

सोमालिया के भारतीय राजदूत हाई कमिश्नर छाबरा से मुलाकात करतीं बीके बिन्नी।

शिव आमंत्रण केन्या। ग्लोबल पीस इनिशिएटिव की रीजनल डायरेक्टर एवं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके बिन्नी ने हाल ही में केन्या और मॉरिशस में शांति व सद्भावना प्रसार यात्रा कर लाखों लोगों को नई आशा व शांति का संदेश दिया। इस दौरान उन्होंने नैरोबी में सोमालिया के भारतीय राजदूत हाई कमिश्नर राहुल छाबरा से मुलाकात की तो मॉरिशस में विविध स्थानों एवं सेवाकेन्द्रों पर आयोजित कार्यक्रमों को संबोधित किया। मॉरीशस में डॉ. बिन्नी ने अपने प्रवास के दौरान बीस से अधिक विविध कार्यक्रमों में प्रमुख वक्ता के रूप में सकारात्मक जीवनशैली तथा मॉरिशियस विश्वविद्यालय में आध्यात्मिकता द्वारा मानसिक स्वास्थ्य विषय पर संबोधन किया। इस शांति यात्रा के दौरान उनके साथ बीके वेदांती, बीके नीना, बीके राजेश सहित ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग सेवाकेंद्र के सदस्य उपस्थित थे।

गांधी स्मारक टिकट की इंडोनेशिया में री-लाचिंग

शिव आमंत्रण बाली। महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में इंडोनेशिया में बाली के नुसा दुआ स्थित पेसिफिका म्यूज़ियम में चित्र प्रदर्शनी के साथ उनकी जयंती मनाई। उसके साथ भारतीय शाकाहारी भोजन उत्सव भी आयोजित हुआ। इस विशेष दिन पर गांधी जी के स्मारक टिकट की री-लाचिंग भी की गई। इस अवसर पर नवनियुक्त कौंसुल जनरल प्रकाश चंद, इंडियन कल्चर सेन्टर के डायरेक्टर मनोहर पुरी एवं ब्रह्माकुमारीज़ में इंडोनेशिया की नेशनल कॉर्डिनेटर बीके जानकी की विशेष उपस्थिति रही। इस अवसर पर अन्य कई विशिष्ट लोग मौजूद थे।

वर्कशॉप / कॉव्लून के कॉर्पोरेट एसोसिएशन सदस्यों ने लिया भाग

कॉर्पोरेट प्रोफेशनल को बताए खुश रहने के तरीके

शिव आमंत्रण कॉव्लून। हांगकांग-कॉव्लून के ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र पर कॉर्पोरेट हेड्स एसोसिएशन 'द सोर्स' द्वारा विशेष कोन्फ्लिक्ट मैनेजमेंट वर्कशॉप ऑर्गनाइज किया गया। वर्कशॉप को एड्रेस करने के लिए ब्रह्माकुमारिज को विशेष तौर पर आमंत्रित किया गया जिसे कॉव्लून सेंटर इंचार्ज बीके बिंदु ने कंडक्ट किया। सेशन में हांगकांग के कई कॉर्पोरेट हेड ने भाग लिया। साथ ही राजयोग मेडिटेशन की जानकारी ली। हांगकांग में यूनेस्को के मानक सचिव एवं ब्रह्माकुमारीज़ के सदस्य तिरुपती नचियप्पन ने यह निमंत्रण लाने में मदद की। टीम का प्रतिनिधित्व कॉव्लून सेवाकेंद्र प्रभारी बीके बिंदु और बीके दीपा द्वारा किया गया। बीके दीपा ने राजयोग की शिक्षाओं के द्वारा इनर पीस के विषय और आत्मा के रूप में एक व्यक्ति की सही पहचान पर चर्चा की। नकारात्मक विचार कैसे खत्म करे और उपयोगी विचारों का अमल करके जीवन खुशनुमा कैसे बनाया जाए इसके बारे मे बीके दीपा ने विस्तार से चर्चा की। इस वर्कशॉप के दौरान कुछ गतिविधिया भी कराई गयी जिसके बाद 7 दिवसीय राजयोग कोर्स की प्रेरणा दी गई। अंत में सभी प्रतिभागियों को स्लोगन्स वितरित किये गए।

कॉर्पोरेट हेड्स के साथ बीके बिंदु और बीके दीपा।

सार समाचार

कोटा, किनाबालु, सबह में पॉज फॉर पीस प्रोजेक्ट प्रारंभ

ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ बीके निर्मला।

शिव आमंत्रण कुआलालंपुर। एशिया पैसिफिक रीज़न एवं भारत में माउण्ट आबू के ज्ञान सरोवर की ब्रह्माकुमारीज़ की डायरेक्टर बीके निर्मला मलेशिया दौरे पर एशिया रिट्रीट सेन्टर पहुंची, जहां मलेशिया की डायरेक्टर बीके मीरा एवं अन्य बीके मेम्बर्स द्वारा उनका भव्य स्वागत हुआ। उनकी उपस्थिति में पॉज़ फॉर पीस प्रोजेक्ट को कोटा, किनाबालु, सबह में लोंचिंग की गई। आगे हाई कमीश्नर ऑफ मॉरीशस डॉ. इसोप पटेल, उनके सेकेण्ड सेक्रेटरी केम राज सिंह एवं हाई कमीश्नर ऑफ इंडिया मृदुल कुमार से भी बीके निर्मला, बीके मीरा तथा बीके भजो ने मुलाकात कर ईश्वरीय संदेश दिया। अपने आध्यात्मिक दौरे के दौरान बीके निर्मला ने पिनांग, ईपॉ, नीबोंग टेबल, ब्रिकफ़ील्ड तथा जोहोर बाहरु में आयोजित सार्वजनिक कार्य मों में कर्मा, फेट और डेस्टिनी समेत अन्य कई विषयों पर अपना वक्तव्य देते हुए वर्तमान समय की परिस्थितियों के समाधान के लिए राजयोग के अभ्यास को ज़रुरी बताया।

सनातन धर्म मंदिर में बीके वेदांती ने दिया आध्यात्म का संदेश

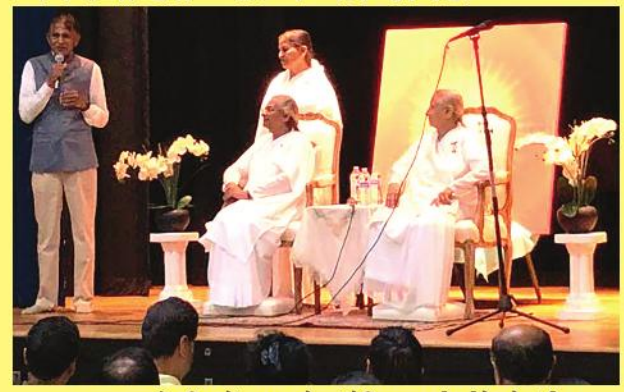

सनातन धर्म मंदिर में सभा को संबोधित करती बीके वेदांती।

शिव आमंत्रण लॉस एंजिल्स। बीके वेदांती के लॉस एंजिल्स आगमन पर सेरीटोस स्थित सनातन धर्म मंदिर के ऑडिटोरियम में आर्ट ऑफ फरगिवनेस विषय पर सत्र रखा गया था, जहां मंदिर के नेता बी.यू. पटेल ने उनका स्वागत किया। इस अवसर पर लॉस एंजिल्स में संस्था की सेन्टर डायरेक्टर बीके गीता की विशेष उपस्थिति रही।

लिविंग विद्आउट रीग्रेट पर बीके चार्ली का लेस्टर में सेशन

शिव आमंत्रण लेस्टर। मिसौरी यूके लेस्टर के हारमनी हाउस में लिविंग विद्आउट रीग्रेट विषय पर एक सेशन रखा गया, जिसको ऑस्ट्रेलिया में ब्रह्माकुमारीज़ के डायरेक्टर बीके चार्ली ने सम्बोधित किया। इस सेशन के दौरान मौजूद लोगों द्वारा पूछे गए कई सवालों के भी बीके चार्ली ने जवाब दिए एवं अंत में सभी को राजयोगाभ्यास द्वारा शांति की अनुभूति कराई गई।

सभा को संबोधित करते बीके चार्ली।

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2018
Posted at Shantivan P.O. Dt. 18 to 20 of Each Month

प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादकः प्रो. कमल दीक्षित ● संपादकः ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● लेआउटः अमर (नोएडा) ● RNI No.: RJHIN/2013/53539